जेकब बर्खार्ट, *दि सिविलाइजेशन ऑफ दि रेनासां इन इटली*, ऑक्सफोर्ड, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सि
प्रेस, 1981 (प्रथम संस्करण 1860)., उन्नीसवीं सदी में यह एक नई व्याख्या है फिर भ
इस विषय पर अब तक की सबसे स्वीकार्य विद्वत्तापूर्ण पुस्तक है.

लॉरा सेरेटा, *क्लेक्टेड लेटर्स ऑफ ए रेनासां फेमिनिस्ट* (अनुवाद डायना रॉबिन), शिकागो, श
यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1997.

आंद्रे चेस्टेल व अन्य, *दि रेनासां : एसेज इन इंटरप्रिटेशन*, लंदन, मैथूइन, 1982. यह पुनर्जाग
पर विख्यात विद्वानों के लेखों का संकलन है. यह विविध व कम ज्ञात पहलुओं को प्रस्तु
करती है.

एम गिलमोर, *दि वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिज्म, 1453–1517*, न्यूयॉर्क, हार्पर कोलोफोन, 1952. य
सर्वेक्षण खास तौर पर मानववाद के सर्वेक्षण की प्रकृति में लिखी गई एक अच्छी पुस्त
है.

ई.एच. मोंबरिच, *दि स्टोरी ऑफ आर्ट*, न्यूयॉर्क, फेडॉन, 1951. यह एक कला समालोचक क
महत्वपूर्ण पुस्तक है.

———, *सिंबोलिक इमेजेज : स्टडीज इन दि आर्ट ऑफ दि रेनासां*, तीसरा संस्करण
ऑक्सफोर्ड, 1985. यह पुनर्जागरण कला के विशेषज्ञ द्वारा लिखी गई पुस्तक है.

जे.आर. हेल, *रेनासां यूरोप : दि इंडिविज्अल एंड सोसाइटी, 1480–1520*, बर्कले, यूनिवर्सि
ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1971. इस पुस्तक का जोर लोगों पर न कि घटनाओं पर है.

आर.जे. नेक्ट, *रेनासां, वारियार एंड पैट्रन, दि रेन ऑफ फ्रैंसिस I*, कैंब्रिज, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रे
1996.

पी.ओ. क्रिस्टेलर, *रेनासां थॉट : दि क्लासिक, स्कॉलैस्टिक एंड ह्यूमैनिस्टिक स्ट्रेंस*, न्यूयॉर्क, हा
टार्क बुक, 1961. यह मानववादी विचारों पर एक विद्वत्तापूर्ण और मौलिक रचना है
इस विषय पर नई अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करती है.

वाल्टर डी. मिगनोला, *दि डार्कर साइड ऑफ दि रेनासां : लिटरेसी, टेरिटोरियलिटी ए
कोलोनाइजेशन*, मिशिगल प्रेस, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन प्रेस, 1995. इसमें यह ब
दिया गया है पुनर्जागरण के सभी पहलू गौरवपूर्ण नहीं थे. इसके कुछ पहलू अंधकार
भी थे.

ग्विडो रगीरो (संपादन), *ए कंपैनियन टू दि वर्ल्ड्स ऑफ दि रेनासां*, ऑक्सफोर्ड, ब्लैकवे
2002. यह पुनर्जागरण की दुनिया के विविध पहलुओं पर आलेखों का एक बड़ा संक
है. इसमें पुनर्जागरण के समय के समाज के नकारात्मक पहलुओं और आंदोलनों
उपलब्धियों और सीमाओं का उल्लेख शामिल है.

जॉन स्टीफेंस, *दि इटैलियन रेनासां, दि ओरिजिंस ऑफ इंटेलेक्चुअल एंड आर्टिस्टिक
बिफोर रिफॉर्मेशन*, लंदन, लांगमैन, 1990. यह पुस्तक संस्कृति, लैटिन अक्षरों और क
के क्षेत्र में आए परिवर्तनों और इटली की विरासत की व्याख्या करती है.

अध्याय तीन

खोजयात्राएं, खोज और औपनिवेशिक साम्राज्य

अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक गतिविधियों की शुरुआत और यूरोपीय वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था के विस्तार का भौगोलिक खोजयात्राओं और अज्ञात देशों की खोज के क्रम में हुई समुद्री गतिविधियों के साथ गहरा संबंध था। आरंभ में इसकी रफ्तार धीमी रही। लेकिन पंद्रहवीं सदी के अंतिम दशक में इसमें गति आई। इसके परिणामस्वरूप अमरीका, एशिया का औपनिवेशीकरण आरंभ हुआ। दूर-दराज के क्षेत्र में अपने औपनिवेशिक साम्राज्य विकसित करने वाले यूरोपीय देशों में पुर्तगाल और स्पेन पहले देश थे। इसके बाद पश्चिमोत्तर यूरोप के राज्यों ने विश्व के विभिन्न भागों में अपने-अपने उपनिवेश स्थापित किए। इस औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा के कारण ही हाल तक कई युद्ध लड़े गए।

पंद्रहवीं शताब्दी तक यूरोपीय राज्यों ने थलमार्ग के माध्यम से पूरब के देशों में व्यापारिक संबंध स्थापित कर लिए थे। मसालों में काली मिर्च, दालचीनी, लौंग और जावित्री के साथ-साथ रेशम और सूती वस्त्र भारत के साथ-साथ अन्य पूर्वी देशों से मंगाए जाते थे और इटली के वेनिस अथवा जेनोआ के व्यापारी इन सामानों को जहाज के जरिए यूरोप भेजा करते थे। इन चीजों को लिवांत के माध्यम से पश्चिमी यूरोप पहुंचाया जाता था। इसी प्रकार अफ्रीका के कुछ हिस्से यूरोपीय सामानों के बदले सोना और बहुमूल्य धातु भेजते थे। पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान तुर्की साम्राज्य के उदय से यूरोपियों को सड़क मार्ग से एशिया आने-जाने में कठिनाई होने लगी। इस कारण और ईसाई और इसलाम धर्म के आपसी धार्मिक विरोधों के फलस्वरूप इसलामी और ईसाई राज्यों के बीच धर्मयुद्ध छिड़ गया। इसी कारण से एशिया पहुंचने के लिए समुद्री मार्ग खोजने की दिशा में तेजी आई। पुर्तगालियों और स्पेनवासियों ने अज्ञात देशों की खोज के लिए समुद्री यात्राओं को संरक्षण और प्रोत्साहन देना शुरू कर दिया।

लगभग पूरी पंद्रहवीं शताब्दी तक समुद्री और महासागरीय यात्राओं पर पुर्तगालियों का दबदबा कायम रहा। पुर्तगाली नाविकों और नौचालकों ने समुद्री हवा के प्रवाह का व्यावहारिक ज्ञान हासिल किया। इसके माध्यम से वे आस-पड़ोस के द्वीपों और निर्जन तटों तक पहुंचने में सफल रहे। काफी लंबे समय तक माना जाता रहा था कि पुर्तगाली इस क्षेत्र में इसलिए अग्रणी थे क्योंकि वे पंद्रहवीं सदी के मध्य तक इसलाम से अपने प्रदेश फिर से जीत कर

विस्तार के लिए तैयार थे। समुद्री खोजयात्राओं के जोशीले संरक्षक, नौचालक राजकुमार हेनरी के नेतृत्व में इस क्षेत्र में पुर्तगाल ने अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक प्रगति की। पुर्तगाल के बारे में पारंपरिक मत यह है कि यह देश शेष यूरोप से कटा था और यहां प्राकृतिक संसाधनों की कमी थी। कहा जाता है कि पंद्रहवीं सदी के आरंभ में पुर्तगाल की आबादी एक मिलियन से कम थी। गिने-चुने शहर थे जो एक-दूसरे से काफी दूर थे। व्यापारी मध्यम वर्ग की संख्या बहुत कम थी। और व्यापार पर इस वर्ग का आधिपत्य था। वहां की कुल आबादी में एक बड़ा हिस्सा किसानों का था जो लगभग अनुर्वरक भूमि पर अपना पसीना बहाते थे। मिन्हो जैसे प्रांत में भूमि की जोत छोटी थी और आबादी घनी थी जबकि अल्गर्वे और अलेंटेजो जैसे दक्षिणी प्रांत मुसलिमों से आजाद हो चुके थे। इस स्थान की विशिष्टता यह थी कि यहां कृषि योग्य बड़े-बड़े भू-भाग थे। हाऊस ऑफ एवीज पुर्तगाली सामंत का नेतृत्व करता था, जिसका दृष्टिकोण युद्ध जैसा आक्रामक था लेकिन वह वाणिज्य व्यापार को महत्व दिया करता था। इतिहासकार इस बात पर आश्चर्यचकित हैं कि आरंभिक काल में तथाकथित इस पिछड़े क्षेत्र ने समुद्री यात्रा और औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना में किस प्रकार नेतृत्व प्रदान किया।

यह सच है कि पुर्तगालियों ने उत्तरी अफ्रीकी तट पर मूर जनजाति (मुसलमानों) के विरुद्ध युद्ध छेड़ा था। ये युद्ध धर्मयुद्ध की प्रकृति के थे लेकिन सचाई यह है कि ये सारे युद्ध अधिक लाभ को ध्यान में रखकर लड़े गए थे। पुर्तगाली नाविकों ने पश्चिमी अफ्रीकी तटरेखा को खोज निकाला था। इसके पीछे उनका उद्देश्य दक्षिणी सहारा से होने वाली सोने की आपूर्ति पर कब्जा करना था, जो मूरों की संपत्ति के प्रमुख स्रोतों में से एक था। अफ्रीकी तट पर हवा की दिशा व मौसम के व्यापक ज्ञान और नौचालन तकनीकी में विकास के कारण पुर्तगाली दक्षिण की ओर बढ़े। एच.वी. लीवरमोर के अनुसार, '1415 में क्यूटा पर अधिकार और 1460 में नाविक हेनरी की मृत्यु के बीच की अवधि में पुर्तगाल ने नौचालन विज्ञान, जहाज निर्माण तथा खोज व उपनिवेशीकरण के तौर-तरीकों में महारत हासिल कर ली थी।' वे विषुवत रेखा के 8 डिग्री के भीतर अफ्रीका के पश्चिमी तट की ओर बढ़े। रॉफ डेविस का मानना है कि नए देशों की खोज में रुचि के पीछे न तो पुर्तगालियों की विचारधारात्मक धर्मयुद्ध की भावना काम कर रही थी और न ही केवल प्रौद्योगिकीय बदलाव कार्य कर रहा था। इसके पीछे मौजूद वास्तविक कारण आर्थिक दबावों की जटिल अंतःक्रिया (पारस्परिक प्रभाव), आंतरिक राजनीति तथा व्यक्तिगत तत्व थे। ब्रोदेल भी इस तथ्य पर जोर देकर कहते हैं कि पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पुर्तगाल उतना निर्धन प्रांत नहीं था जितना कि बतलाया गया है और न ही वह शेष यूरोप से पूर्णतः कटा हुआ था। उसकी अर्थव्यवस्था न तो आदिम थी न ही आरंभिक। भूमध्यसागरीय किस्म की जलवायु के कारण पुर्तगाल तेल, कॉर्क, फल, मोम और शहर जैसे सामानों के उत्पादन में सक्षम था, जिसे वह यूरोप के उत्तरी राज्यों में भेजता था और दूसरे क्षेत्रों से अनाज का आयात करता था। बाहरी देशों के

साथ व्यापारिक संबंध होने के कारण नौपरिवहन संबंधी गतिविधियों में पुर्तगाल को बड़ी मदद मिली। प्रिंस हेनरी ने विद्वानों के एक समूह और नौचालकों को अपने दरबार में आश्रय दे रखा था और कई असफलताओं के बावजूद उन्होंने समुद्री यात्राओं को प्रोत्साहित करना जारी रखा था। इस प्रकार इस क्षेत्र में प्रिंस हेनरी की भूमिका को कम नहीं आंका जा सकता है। पुर्तगाल द्वारा आरंभ में किए गए इस प्रकार के प्रयासों के पीछे एक-दो नहीं बल्कि कई उद्देश्य प्रतीत होते हैं। ऐसी खर्चीली समुद्री यात्रा में होने वाली पूंजीगत कमी को पूरा करने के लिए जर्मनी के फुगर्स तथा जेनोआ के व्यापारी साहूकारों से ऋण लिया गया था। इन यात्राओं में अपनी पूंजी लगाने के पीछे इन व्यापारियों का निजी स्वार्थ था। उनका उद्देश्य इसके जरिए केवल संभावित मुनाफा कमाना ही नहीं बल्कि व्यापार में वेनिसवासियों के वर्चस्व को बनाए रखना भी था। अफ्रीकी व्यापार के परिणामस्वरूप व्यापारी, राजा और सामंत आर्थिक रूप से समृद्ध हो गए। पुर्तगालियों ने सोना और हाथी दांत से बनी विलासिता की वस्तुओं को यूरोपीय बाजार में बेचना आरंभ कर दिया और इससे उन्होंने खूब मुनाफा कमाया। पंद्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में नए देशों की खोज और भारत और चीन के लिए समुद्री मार्ग ढूंढ़ने को लेकर एंदालुसिया के समुद्री नाविक और कस्तील के खोजकर्त्ताओं और पुर्तगाल के बीच प्रतिस्पर्द्धा शुरू हो गई। इस प्रतिस्पर्धा से पंद्रहवीं शताब्दी के साठ से सत्तर के दशक में खोज के क्षेत्र में नए युग का जन्म हुआ।

आरंभिक समुद्रीयात्राओं के उद्देश्य

जिन दिनों यूरोपीय समाज में सामंती व्यवस्था का बोलबाला था, वेनिसया और जेनोआ जैसे नए राज्यों ने एशिया और यूरोप के बीच विलासिता की वस्तुओं के व्यापार पर अपना एकाधिकार कायम करके अपार धन कमाया। अधिकतर एशियाई जिंसों को सड़क मार्ग से ले जाया जाता और फिर उन्हें भूमध्यसागर के रास्ते यूरोप लाया जाता था। अंटलांटिक तट पर स्थित देश इटली के स्थापित व्यापारिक एकाधिकार को तोड़ना चाहते थे और इसलिए उन्होंने एशिया तक पहुंचने के लिए वैकल्पिक मार्ग की तलाश शुरू कर दी। इस दिशा में आइबेरियाई शक्तियों—पुर्तगाल और स्पेन ने पहल की। यह कह पाना बड़ा कठिन है कि समुद्री खोज और लंबी समुद्री यात्रा के पीछे इन देशों की कोई सीमित मंशा रही होगी।

यूरोपीय समुद्री नाविकों के आरंभिक खोज के लिए दी गई पारंपरिक व्याख्या में तीन तत्वों—ईश्वर, ऐश्वर्य और यश को स्थान दिया गया है। यहां 'गॉड' या ईश्वर का अर्थ इस प्रकार की समुद्री यात्राओं में ईसाइयत की भूमिका से है। 'गोल्ड' अथवा ऐश्वर्य का अर्थ यहां आर्थिक इरादों से है वहीं 'ग्लोरी' अथवा यश का मतलब उन लोगों से है जिन्होंने नए देशों अथवा क्षेत्रों की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। काफी लंबे समय से यह समझा

जा रहा था कि तुर्क के मध्य पूर्व की ओर बढ़ने और 1453 में कुस्तुनतुनिया पर उनके अधिकार कर लेने से व्यापार मार्ग और पूरब के देशों के उत्पादों का लाल सागर से होकर आवाजाही का मार्ग बंद हो गया। लेकिन अब इस तर्क का कोई आधार नहीं है। वस्तुतः पुर्तगाली समुद्री यात्राओं का आरंभ इस सबसे काफी पहले ही हो चुका था। तुर्क साम्राज्य के विस्तार से व्यापार मार्ग बाधित नहीं हुआ था क्योंकि पंद्रहवीं शताब्दी की समाप्ति तक मध्य-पूर्व से मसालों के आयात में वृद्धि हो रही थी और इसके दाम गिर रहे थे। इसके अलावा, सोलहवीं शताब्दी के आरंभ के दशकों तक *तुर्कों* ने लिवांत के प्रमुख वितरण केंद्रों को नहीं जीता था। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि तुर्की शासन ने अव्यवस्था और अराजकता को जन्म नहीं दिया।

पश्चिमी अफ्रीकी तट के समीप की गई आरंभ की कुछ समुद्री यात्राएं मुख्यतः मुसलमानों के विरुद्ध धर्मयुद्ध ही थे। धर्मयुद्ध की यह भावना स्पेन के नेतृत्व में शीघ्र ही सैन्य रूप में परिणत हो गई। ऐसा समझा जाता था कि यूरोप के बाहर भी ईसाई समुदाय के लोग मौजूद हैं, इसलिए यूरोपियों के मन में दूर बसे उन ईसाइयों से संपर्क बढ़ाने की इच्छा जगी। इसके परिणामस्वरूप समुद्री यात्राओं को बढ़ावा देने वाले फ्रांसीसियों के बीच धर्मप्रचार का जोश अचानक बढ़ने लगा। साथ ही, संपूर्ण यूरोप में पोप सर्वोच्च धार्मिक सत्ता होने के कारण उसकी आज्ञा और निर्णय का बड़ा महत्व था। इसलिए कई समुद्री नाविक और उनके संरक्षक नए देशों में ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए पोप का आशीर्वाद और आज्ञा प्राप्त करना चाहते थे।

मध्य युग में कुछ लोग और कुलीन वर्ग के लोगों को समुद्री यात्रा में गहरी दिलचस्पी थी। 1256 में मार्को पोलो ने वेनिस से चीन एवं जापान की यात्रा प्रारंभ की। उन्होंने मंगोल सम्राट कुबला खां के दरबार में 14 वर्ष बिताए। अपनी पुस्तकों में उन्होंने चीन के नगरों का भव्य वर्णन प्रस्तुत किया है। 1298 में जेनोआ में कैद के दौरान, मार्को पोलो ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *लीव्र डेस मार्वेले दु मोन्दे* के लिए अपना अनुभव अपने मित्र रस्टिसेला ऑफ पिसा को लिखवाया था। 1307 से उनकी इस किताब की प्रतियां छपीं, अनुवाद हुआ तथा पूरे यूरोप में वितरित किया गया। मार्को पोलो की इस पुस्तक की लोकप्रियता 17वीं शताब्दी तक बनी रही। मार्को पोलो की पूर्व की ओर यात्रा, समुद्री मार्ग से होकर उनकी वापसी और रोमांचक और साहसी कारनामों ने कई खोजकर्ताओं व समुद्री यात्रियों को समुद्री यात्राओं के लिए प्रेरित किया। 1400 के आसपास एक अन्य वेनिस वासी निक्कोलो कोन्टी ने एशिया की यात्रा की और पूर्व की समृद्धि का विस्तृत रूप से वर्णन किया। इनकी पुस्तक को भी काफी ख्याति मिली। फिर भी लेखक एवं इतिहासकार आरंभिक समुद्री यात्राएं आरंभ कराने और उसके संरक्षण का श्रेय पुर्तगाल के जॉन प्रथम के पुत्र प्रिंस हैरी (1394-1460) को देते हैं। इसके पीछे हैरी की सही-सही मंशा बता पाना कठिन है लेकिन इसके पीछे उनके यश पाने की व्यक्तिगत चाहत रही होगी। राजकुमार हेनरी ने पंद्रहवीं शताब्दी में हुए

पुर्तगाली खोज की बौद्धिक भावना को मूर्त रूप प्रदान किया। वह ब्रह्मांड विज्ञान, खगोल विज्ञान, मानचित्र कला तथा नौकायन तकनीकी में होने वाले अनुसंधानों का खुले दिल से समर्थन करते थे। समय-समय पर सुसंगठित अभियान दल भेजने के लिए वह धन भी इकट्ठा करते थे। नवीनतम खोज और नौकायन के तौर-तरीकों का उपयोग करके पुर्तगालियों ने उनके निर्देशन में अज्ञात देशों को ढूंढ़ निकालने में काफी बड़ी उपलब्धि हासिल की। पश्चिमी अफ्रीकी तट पर भेजे गए उनके नाविकों ने मेडेरिया द्वीपसमूह, सूडान और सेनेगल का पता लगाया। बाद में उन्हें नाविक हेनरी के नाम से जाना जाने लगा, यद्यपि उन्होंने कभी कोई समुद्री यात्रा नहीं की थी। उन्होंने अपने काल के इतिहास को दिशा प्रदान की इसलिए इतिहासकार इस क्षेत्र में उनकी भूमिका की प्रशंसा करते नहीं थकते।

समुद्री यात्राओं और औपनिवेशिक राज्यों की स्थापना में शक्तिशाली शासकों के नेतृत्व में शक्तिशाली केंद्रीकृत राज्यों के उदय की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। कुछ शासकों ने भौगोलिक खोज को प्रोत्साहित करने और नए देशों का पता लगाने में व्यक्तिगत दिलचस्पी दिखाई जो कालांतर में उनके लिए बड़ा महत्वपूर्ण साबित हुआ। साम्राज्य निर्माण के प्रारंभिक चरण में स्पेन के इजाबेल तथा फर्डिनैंड के योगदान निरंकुश शासकों की भूमिका को दरशाते हैं। पारंपरिक सामंतवाद के बजाए मध्यवर्ग की सहायता से पुर्तगाल में हुए एविज वंश की स्थापना ने आर्थिक लाभ के उद्देश्य से समुद्री यात्रा करने के प्रति नई रुचि पैदा की। ये सब वे तत्व हैं जिन्होंने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार की लंबी समुद्री यात्रा का वास्तविक उद्देश्य आर्थिक था।

समुद्री यात्राओं के पीछे आर्थिक कारणों पर बल देते हुए स्केमेल (*दि फर्स्ट इम्पेरीयल एज*) लिखते हैं कि पुर्तगालियों की यात्रा के पीछे सोना आरंभिक उद्देश्य नहीं था क्योंकि वहां वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था उस स्तर तक विकसित नहीं हो पाई थी जिसके लिए भारी मात्रा में सोने की आवश्यकता हो। पुर्तगालियों का सोने के प्रति आकर्षण बहुत बाद में उत्पन्न हुआ। वे केटलन तथा कुछ इटली के राज्य थे जिन्होंने सोना उत्पादक क्षेत्रों के लिए समुद्री मार्ग खोजना चाहा था। इस समय पुर्तगाल आर्थिक रूप से इतना विकसित नहीं हुआ था कि वह सोने की खोज के लिए एड़ी चोटी एक करता। पर ब्रोदेल (*दि पर्सपेक्टिव ऑफ दि वर्ल्ड*, पृ. 140) इस बात से असहमत हैं। उनका कहना है कि पुर्तगाली अर्थव्यवस्था न तो प्राचीन थी न ही अर्वाचीन। सदियों से पुर्तगाल के संबंध ग्रेनाडा जैसे मुसलिम देशों से रहे थे और इस प्रकार उसने अपना एक पर्याप्त मौद्रिक अर्थव्यवस्था का स्तर विकसित कर लिया था जो कुछ हद तक दिहाड़ी मजदूरों पर आधारित था। कई समुद्रतटीय शहर और गांव ऐसे थे जहां मछुआरे और समुद्र-यात्री रहते थे। वस्तुतः जमींदारों के आंशिक पतन और बुर्जुआ वर्ग के उदय ने व्यापारिक जाल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह भी सत्य है कि विदेशी व्यापारी आरंभिक समुद्री यात्राओं में प्रमुख रूप से भाग लेते थे। फ्लोरेंस और वैनिस जैसे इटली के नगर राज्यों ने अपने वाणिज्यिक और वित्तीय कौशल के

बल पर काफी धन इकट्ठा कर लिया था और वे इस धन का बड़ा हिस्सा इन समुद्री यात्राओं पर व्यय किया करते थे। इस प्रकार पूंजी की उपलब्धता ने आरंभिक चरण की समुद्री यात्राओं और होने वाली खोजों में अपना योगदान दिया।

इस बात को लेकर इतिहासकारों के बीच मतभेद है कि समुद्री यात्राओं और खोजों में बढ़ती आबादी का कोई हाथ था। इस संबंध में कुछ इतिहासकारों का कहना है कि उन दिनों यूरोप की आबादी महाद्वीप के जीवनोपयोगी साधनों के अनुपात में कहीं अधिक बढ़ गई थी। इसलिए नए देशों की खोज को भूमि और अन्न की कमी को पूरा करने के लिए अति आवश्यक अवयव के रूप में देखा जाता है। तुर्कों के साम्राज्य विस्तार के साथ यह आवश्यकता और बढ़ गई जिन्होंने पूर्व की ओर यूरोप के बढ़ते कदम को रोका और उन्हें पूर्वी भूमध्यसागरीय भूभाग और सागरीय संसाधनों से वंचित रखा। परंतु ऐतिहासिक सत्य कुछ अलग तसवीर प्रस्तुत करते हैं। जब पंद्रहवीं शताब्दी के आरंभिक दशक में पुर्तगाल ने समुद्री यात्राओं का आरंभ किया था, यूरोप ब्लैक डेथ्स के रूप में जनसांख्यिकीय संकट से तुरंत बाहर निकला ही था। इस प्रकार इस समय यूरोप में भारी जनसंख्या का कोई संकेत नहीं मिलता। केप वर्डे पर अधिकार भी यही संकेत देता है कि वहां यूरोप के लोग नए देशों में जाने और वहां बसने के लिए तैयार नहीं थे। परंतु इस सदी के उत्तरार्द्ध में यूरोप की जनसंख्या में वृद्धि स्पष्ट रूप से दिखने लगी थी। पंद्रहवीं शताब्दी अंत में यूरोप की जनसंख्या बढ़नी आरंभ हो गई और इसके परिणामस्वरूप कई वस्तुओं की मांग में तेजी आई। जनसंख्या की निरंतर वृद्धि तथा व्यापार के बढ़ते स्वरूप के कारण सोने, चांदी और अन्य धातुओं से बनी मुद्राओं की कमी हो गई। 1400 तक बोहेमिया के खदानों से भारी मात्रा में चांदी निकाली जाती थी, परंतु सोने की मात्रा कम थी। अफ्रीका सोने के चूर्ण का प्रमुख आपूर्तिकर्ता था लेकिन वह निम्न प्रकार की धातुओं का उत्पादन नहीं करता था। इसमें संदेह नहीं है कि आरंभ में हुई समुद्री यात्राओं में से ऐसी अधिकतर यात्राएं सोने और चांदी की तलाश में की गईं। इन यात्राओं से हुई खोज की सफलता अथवा असफलता को खोजे गए नए देशों से होने वाले आर्थिक लाभ की संभावनाओं से जोड़ कर देखा जाता था। कोलंबस ने अपने द्वारा खोजे गए क्षेत्र में चांदी की उपलब्धता होने के तथ्य को प्रमाणित कर अपनी अगली दो समुद्री यात्राओं के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त की। समुद्री यात्राओं के प्रोत्साहन के पीछे भोजन की आवश्यकता की भूमिका को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है। मैक्सिको को खोज निकालने वाले हरमन कोर्ट्स स्पष्ट शब्दों में स्वीकार करते हैं, 'हम स्पेनवासी हृदय की कमजोरी से ग्रसित हैं, सोना जिसका एक मात्र इलाज है।' एक ओर यह कहा जाता है कि आईबेरियाई राज्य अपनी खाद्य आवश्यकताओं के लिए अन्य राज्यों पर निर्भर थे। नए देशों की खोज में इसकी अवश्य ही महत्वपूर्ण भूमिका रही होगी। इस संबंध में यह तर्क दिया जाता है कि उत्तर अफ्रीका में पुर्तगाल का पहला शिकार अन्न उत्पादक क्षेत्र था। दूसरी ओर यह कहा जाता है कि पुर्तगालियों की रुचि खाद्य सामग्री की अपेक्षा

अन्य व्यापारिक उत्पादों में अधिक थी। नए देशों की खोज के बाद ही पुर्तगालियों ने गन्ना जैसी फसल के महत्व को जाना।

पंद्रहवीं शताब्दी में मांस में डाले जाने वाले खाद्य परिरक्षक के रूप में मसालों और खाद्य पदार्थों की मांग लगातार बढ़ रही थी। तत्कालीन लेखा-जोखा संकेत देते हैं कि मांस की खपत तेजी से बढ़ने लगी थी। परंतु घटिया किस्म के मांस को केवल ढेर सारे मसाले डालकर ही स्वादिष्ट बनाया और सुरक्षित रखा जा सकता था और ये मसाले मुख्यत: एशिया से आते थे। इससे स्पष्ट है कि वास्को डी गामा का असली उद्देश्य एशिया के मसालों के स्रोत तक पहुंचना था और जब वह भारत पहुंचता तो उन्हें काली मिर्च का भाव वेनिस की अपेक्षा कालीकट में कहीं अधिक सस्ता लगा।

गुलामों के व्यापार के नियंत्रण से होने वाला लाभ भी यूरोप के बाहर औपनिवेशिक राज्यों के उदय में एक अन्य महत्वपूर्ण कारक बना। 14वीं शताब्दी में हुए ब्लैक डेथ से अधिकतर यूरोपीय राज्यों में मजदूरों की कमी हो गई थी। इसके परिणामस्वरूप पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य तक पुर्तगाल में गुलामों (दासों) का एक व्यापक बाजार विकसित हो गया। प्रत्येक वर्ष वहां करीब 1,000 दास लाए जाते थे। इस प्रकार पुर्तगाल तथा स्पेन के समृद्ध घरों में गुलामी आम बात हो गई। अनुमान लगाया जाता है कि 15वीं शताब्दी के अंत तक लिस्बन की आबादी का 10% भाग गुलामों का था। इस प्रकार अफ्रीका के तटीय इलाकों में उपनिवेश की खोज में गुलामों की मांग की भी भूमिका रही थी जहां से अधिकांश गुलाम खरीदे जाते थे।

इस प्रकार, नए देशों की खोज तथा औपनिवेशिक राज्यों की स्थापना के पीछे आर्थिक कारकों के प्रमुख योगदान के अलावा शासकों के साझा प्रयास, बुर्जुआ वर्ग और अभिजात्य वर्ग का भी कम योगदान नहीं था। *रिकंक्विस्टा* को पहले मोरक्को तक फैलाकर अपनी शक्ति को बढ़ाने तथा सैनिक अभियानों में महारत हासिल करने और इसके बाद अधिकार किए गए क्षेत्रों में कृषि के प्रति रुचि विकसित करने के लिए अभिजात्य वर्ग नए देश और नए अवसरों की तलाश में था। इन क्षेत्रों में गन्ने की खेती को प्रोत्साहन उनकी इस रुचि का परिचायक है। बुर्जुआ वर्ग नए उत्पादों के जरिए लाभ कमाने का इच्छुक था और यह महासागर के दोनों ही ओर इन उत्पादों को लोकप्रिय बनाने के लिए सक्रिय था। वहीं शासक वर्ग अपने राजस्व को बढ़ाकर ताकतवर बनने के लिए दूर-दराज के क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व कायम करना चाहता था। ईसाई धर्म प्रचारकों ने धर्म युद्धों में अपनी आरंभिक सफलता के बाद धर्मांतरण के माध्यम से अपनी संख्या बढ़ाने के उद्देश्य के लिए इन अवसरों का उपयोग किया। अपने व्यक्तिगत यश के लिए और ज्ञान की भूख और साहसिक कारनामों के प्रति अपनी रुचि के कारण इसमें कई लोगों ने अपना योगदान दिया। उपनिवेशों के उदय के साथ, धीरे-धीरे अन्य उद्देश्य भी प्रकट होते चले गए।

भौगोलिक ज्ञान और नौपरिवहन प्रौद्योगिकी में वृद्धि

प्राचीन काल से ही कई लेखनों में समुद्र के उस पार भूभाग होने का वर्णन मिलता है। टॉलमी की *ज्योग्रफी* और स्ट्रेबो की कई पुस्तकों में भी इसका उल्लेख है। मानववादियों ने इन पुस्तकों का लैटिन में अनुवाद किया। 1410 में कार्डिनल पीयर डी एली ने *इमेगो मंडी* लिखा जिसमें उन्होंने बताया कि पूर्व की लंबी यात्रा करके एशिया में पहुंचा जा सकता है। इन सभी ग्रंथों में कुछ मौलिक गलतियां थीं, लेकिन इन पुस्तकों ने अज्ञात देशों की खोज के प्रति रुचि को पुन: जीवित कर दिया। मध्य युग में शिक्षित लोग विश्व को गोल मानते थे, लेकिन इस बात को लेकर व्यापक मतभेद बना रहा कि यूरोप के दूसरी ओर क्या है। यूरोप वासियों को अमरीकी महाद्वीप के विषय में कोई जानकारी नहीं थी। प्राचीन भूगोलवेत्ता प्लिनी का विश्वास था कि विषुवत रेखा एक दुर्गम रेखा है और जो कोई भी इसे पार करने की कोशिश करेगा उसकी मृत्यु हो जाएगी। टॉलमी का यह विचार था कि हिंद महासागर चारों ओर भूमि से घिरा है जबकि स्ट्रेबो ने भारत को अटलांटिक में बताया था । टोस्कनेली ने ही कोलंबस को एशिया पहुंचने के लिए लिस्बन में उसी अक्षांश पर पश्चिम की ओर नौयात्रा करने की सलाह दी थी। भूगोल की सीमित जानकारी के बावजूद वे यह मानने को तैयार नहीं थे कि यात्रा में समुद्र कोई बाधा नहीं है बल्कि वह जलमार्ग है। आरंभिक समुद्री यात्रा की सफलता नक्शा बनाने और नौचालन तकनीकी कौशल पर निर्भर थी। ज्यामिति और अंकगणित की अच्छी समझ नौचालन, नक्शा बनाने की कला तथा सर्वेक्षण की कला को अति आवश्यक आधार प्रदान किया। तेरहवीं शताब्दी में प्रयोग किए जा रहे नक्शे व मानचित्रों का विज्ञान से कोई लेना-देना नहीं था। मार्टिन वेहेम और जेम्मा फ्रिसिंस जैसे गणितज्ञ और खगोलशास्त्री ने वैज्ञानिक नौचालन को सैद्धांतिक आधार प्रदान किया जबकि कोलबंस और कैबोट जैसे नाविकों ने इसे करके दिखाया। पुर्तगालियों ने नौचालन और मानचित्र कला में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1424 में जुआन पिज्जीगानो ने नौचालन नक्शा तैयार किया। इसमें आयरलैंड, इंगलैंड, पश्चिमी यूरोप, आईबेरियाई प्रायद्वीप और पश्चिमोत्तर अफ्रीका, उत्तर अटलांटिक के संपूर्ण क्षेत्र को दरशाया गया था। गेब्रियल डी वाल्सेका के 1439 के प्रसिद्ध मानचित्र में काला सागर, भूमध्यसागरीय यूरोप, अफ्रीकी तट के अटलांटिक द्वीपसमूह दरशाए गए थे, जिसमें केप बोजडोर और नौ अजोर्स द्वीपसमूह शामिल हैं। पुर्तगाली नाविक अक्षांशों को सुनिश्चित करने के लिए ध्रुवतारा के स्थान पर दूरी-ऊंचाई विधि का उपयोग करते थे। अक्षांश के आकलन के लिए तारों का पहली बार प्रयोग 1462 में किया गया और अक्षांश के आकलन के लिए दोपहर के सूर्य का उपयोग करना 1484 में आरंभ हुआ। पुर्तगाली यहूदी, अब्राहम जाकुतो जो बाद में लिस्बन के राजकीय खगोलशास्त्री बन गए, ने सूर्य की ऊंचाई पर एक सूची तैयार की। 1514 में जोआओ डी लिस्बोआ ने

चुंबकीय विचलन को निश्चित करने के लिए चुंबकीय दिशासूचक का प्रयोग किया। अकादमिक विज्ञान और प्रायोगिक कौशल इन दो क्षेत्रों को साथ लाने में यह एक महत्वपूर्ण कदम था। 1569 में फ्लेम के मरकेटर के नाम से प्रसिद्ध नक्शाकार गेरार्ड डी क्रमर ने *वक्र पृथ्वी* की सटीक तसवीर को सपाट कागज पर उतारने की विधि का आविष्कार किया। इसे मरकेटर प्रक्षेपण के रूप में जाना जाता है। इससे नाविकों के लिए सीधी रेखा खींच कर मार्ग रेखांकित करना सरल हो गया। इससे नक्शों के अध्ययन और नक्शा बनाने के कार्य को गति मिली और समुद्री यात्रा सरल हो सकी। नक्शा का उपयोग पुर्तगाली सफलता का एक महत्वपूर्ण कारण था। इस रहस्य को जाहिर नहीं किया गया था और इसे अन्य लोगों से गुप्त रखा गया था। प्राचीनतम उपलब्ध नक्शे चौदहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के हैं। इसे पैट्रन चार्ट कहा जाता है जिसे जानवर के सिझाए हुए खाल पर बनाया जाता था। परंतु सोलहवीं शताब्दी तक गणित और नाविकों के बीच सहयोग के कारण नौचालन विज्ञान अंतरराष्ट्रीय विषय बनने लगा।

लंबी दूरी की समुद्री यात्रा के लिए जहाज निर्माण तकनीकी में सुधार की आवश्यकता थी। सोलहवीं शताब्दी में बने जहाजों को *कोब्स* कहा जाता था जो भारी बड़े ट्यूब के जैसा और आकार में झांवा जैसे थे। 1430 के आसपास *कोब्स* का स्थान *कारावेल* ने लिया जो पतले, हलके और अधिक टिकाऊ थे। ये अरबी तकनीकी पर आधारित थे और इनकी गति अपेक्षाकृत तेज थी। इसके बाद तकनीकों को मिलाकर *कारावेल रेडोंडा* बनाया गया जो अपने जहाजी तोपखाने से लैस होने के कारण विशेष तौर से उपयोगी थे। इधर डचों ने भी *फ्लिट* को विकसित कर लिया जिसकी तकनीकी बेहतर थी। यह *कारावेल* से हलका था और इसके चलाने में खर्च भी कम लगता था।

पुनर्जागरण और समुद्री यात्राएं

जहां तक समुद्री यात्रा और पुनर्जागरण के बीच के संबंध का प्रश्न है इसकी व्याख्या की दो शाखाएं प्रचलित हैं। इसमें से पहली शाखा आरंभिक समुद्री यात्रा पर पुनर्जागरण के प्रभाव का समर्थन करती है इसलिए इसे पुनर्जागरण सिद्धांत शाखा के नाम से जाना जाता है। पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मानववादियों ने सर्वप्रथम 'खोज' शब्द का प्रयोग किया था। इसका आशय प्राचीन ग्रंथों तथा संस्कृति और समुद्री यात्रा द्वारा यूरोप के बाहर नए देशों की खोज से था। पोग्गियो (Poggio) ने नाविक हेनरी की तुलना सिकंदर महान से की और उसकी उपलब्धियों को सिकंदर से अधिक महान बताया। उन्होंने लिखा है, 'नई दुनिया की खोज के बारे में पुनर्जागरण मानव की गहरी उत्सुकता एक निर्विवाद सत्य है।' गुडनबर्ग के प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार से लैटिन और देशी बोली में लिखी कृतियों में अचानक तेजी आई। 1481 से 1610 के बीच यूरोप के बाहर के देशों के भूगोल से जुड़ी किताबों के कैटलाग में 524 शीर्षक मौजूद थे।

पुनर्जागरण और आरंभिक समुद्री यात्राओं के बीच कुछ सामान्य विशेषताएं देखी जा सकती हैं। इन दोनों ही क्षेत्रों में हिस्सा लेने वाले अपने ऐतिहासिक भूमिकाओं से अवगत थे। इन दोनों में ही प्रसिद्धि और यश के लिए भूख थी। ऐसा माना जाता है कि महान पुर्तगाली महाकाव्य *लूसियाडस* का वास्को डी गामा पर गहरा प्रभाव था और टोस्कनेली ने कोलंबस को कुछ निश्चित दिशाओं में बढ़ने का निर्देश दिया था। इस संबंध में यह भी तर्क दिया जाता है कि खोजकर्ताओं ने कास्मोग्राफिकल सिद्धांत को व्यवहार में लाने के लिए इसे वैज्ञानिकों की तरह व्यवहार किया। जे.आर. हेल लिखते हैं, 'पहला वैज्ञानिक प्रयोगशाला विश्व ही था।' पुनर्जागरण सिद्धांत के समर्थकों का मानना है कि नए देशों की खोज उत्सुकता और प्रयोग पर आधारित थी जिसने पुनर्जागरण आंदोलन को दिशा दी। इस विषय में यह भी कहा जाता है कि पुर्तगाल और स्पेन के कई जहाजी और आरंभिक समुद्र यात्री मूल रूप से पुनर्जागरण की जन्मस्थली इटली के थे। कोलंबस इटली के शहर जेनोआ के रहने वाले थे। परंतु यह भी अवश्य याद रखना चाहिए कि अन्य इटालियन नगरों की भांति जेनोआ में सक्रिय पुनर्जागरण की गतिविधि शायद ही देखने को मिलती है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि पुनर्जागरण के मानववादियों ने प्राचीन भौगोलिक ज्ञान इटली से ही प्राप्त किया था जिससे आरंभिक समुद्री यात्राओं को प्रोत्साहन मिला। लेकिन फिर भी यह संबंध उतना घनिष्ठ और प्रत्यक्ष नहीं था जितना बताया जाता है। पुनर्जागरण सिद्धांत शाखा के ठीक उलट, उन विद्वानों की एक लंबी कतार है जिनका मानना है कि यूरोप के बाहर देशों का विस्तार मध्ययुगीन तैयारी का परिणाम है। समुद्री यात्रा पर जाने के पीछे सबसे महत्वपूर्ण कारक आर्थिक उद्देश्य था यानी विलासिता संबंधी एशियाई वस्तुओं की खोज करना, मध्ययुगीन यूरोप में जिनकी कीमत बहुत ज्यादा थी। मुसलिम व्यापारी एशिया और यूरोप के बीच विनिमय की कड़ी के रूप में सक्रिय थे। समुद्री यात्रा और औपनिवेशिक साम्राज्यों की स्थापना का सिलसिला मध्ययुग में ही आरंभ हो चुका था। बहुत पहले 1291 में विवल्डी बंधुओं ने पश्चिमी रास्ते से ईस्ट इंडीज पहुंचने के इरादे से अटलांटिक की समुद्री यात्रा की। हालांकि इस प्रयास में उन्हें अपनी जान गंवानी पड़ी लेकिन उनके प्रयास पुर्तगाली नाविकों को प्रेरित करते रहे जिसके परिणामस्वरूप पुर्तगालियों ने अजोर्स द्वीपसमूह तक पहुंचने में सफलता प्राप्त की। पुर्तगाली नौचालन तकनीकी से वे चौदहवीं शताब्दी में ही नए प्रदेशों को ढूंढ़ निकाल सकते थे क्योंकि अजोर अमरीका के रास्ते में यूरोप से अभी दूर स्थित था।

पुनर्जागरण की गतिविधियों को प्रबल समर्थन देने वाले इटली के अग्रणी राज्यों का खोज से जुड़ी समुद्री यात्राओं के साथ कोई सीधा संपर्क नहीं था। इसी प्रकार खोजकर्ताओं और समुद्री यात्रियों को पुनर्जागरण की विद्वत्ता से थोड़ा-बहुत अथवा कोई लेना-देना नहीं था। मानववादियों के लिए यूरोपियों द्वारा खोजे गए नए देशों की खोज की अपेक्षा प्राचीन विश्व और साम्राज्यों की पुनः खोज कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी। इस प्रकार इन दो घटनाओं

का भौगोलिक आधार एक दूसरे से बिलकुल भिन्न था। पुनर्जागरण इटली के राज्य और बरगुंडी में केंद्रित था जबकि समुद्री यात्रा का शुभारंभ पुर्तगाल और स्पेन के आईबेरियन राज्यों से हुआ था। पुनर्जागरण मूल रूप से समाज के सांस्कृतिक पहलुओं से जुड़ा था वहीं समुद्री यात्राओं के पीछे प्रत्यक्ष आर्थिक उद्देश्य काम कर रहा था।

आरंभिक समुद्री यात्राएं

आरंभिक खोजों और समुद्री यात्राओं की अगुआई पुर्तगालियों ने की। कैनरीज, मेदीरा और अजोर्स के अटलांटिक द्वीपसमूहों का पता लगा लिया गया और पंद्रहवीं शताब्दी के आरंभ तक आईबेरियों ने इन पर अपना उपनिवेश स्थापित कर लिया। पश्चिम अफ्रीका के क्वेटा, केप बोजाडोर, केप वर्डे और सियेरा लिओन के विजय के बाद, 1415 से 1475 के बीच मध्यकालीन यूरोप की भौगोलिक सीमाएं टूट गईं। इन द्वीपों से अफ्रीकी सोना और काली मिर्च प्राप्त होती थी और यहां चीनी का उत्पादन किया जाता था। इससे व्यापार में तेजी आई। लेकिन राजनीतिक और धार्मिक प्रोत्साहन 1460 के बाद ही आरंभ हो सका। इन द्वीपों की खोज के बाद ही इनका शोषण शुरू हो गया। ब्रोदेल के अनुसार चीनी के प्रति गहरी रुचि ही इनके शोषण की मुख्य वजह थी। इसके परिणामस्वरूप, इन द्वीपों पर मजदूरों की आवश्यकता बढ़ी और अफ्रीका और यूरोप के बीच गुलामों के व्यापार का आरंभ हो सका।

1481 में पुर्तगाल के सिंहासन पर जॉन द्वितीय की ताजपोशी दो महत्वपूर्ण समुद्री यात्राओं की साक्षी बनी। डिएगो काओ ने इक्वेडोर से केप क्रास तक फैले लंबे तट का पता लगाया, जो इस समय नामीबिया के नाम से जाना जाता है। उनकी यात्राओं से खाद्य पदार्थों की उपलब्धियों की दृष्टि से अंगोला और नामीबिया जैसे बंजर भागों का भी पता चला। माना जाता है कि उन्होंने बिना देखे ही *केप ऑफ गुड होप* को दो बार पार कर लिया था। बार्थोलोमेव डिएज एक अन्य महत्वपूर्ण खोजकर्ता थे, जो दक्षिण में और आगे तक गए और उन्हें एक अंतरीप मिला जिसे उन्होंने *केप ऑफ स्टार्म्स* कहा, लेकिन राजा जॉन ने इसका नाम बदलकर *केप ऑफ गुड होप* (1488) रखा, क्योंकि यह भारत जाने का सीधा रास्ता था। समुद्र यात्रियों में सबसे अधिक प्रसिद्ध क्रिस्टोफर कोलंबस थे। उनका जन्म जेनोआ में 1441 में हुआ। समुद्री यात्राओं में उनकी गहरी दिलचस्पी थी। इंगलैंड और आयरलैंड और शायद अफ्रीकी तट की यात्रा के क्रम में उन्होंने अटलांटिक के विषय में जानकारी प्राप्त की। उन्हें अफ्रीका के पश्चिमोत्तर तट पर रुकने का अनुभव था। यहीं उन्होंने अटलांटिक नौकायन की बारीकियों का अध्ययन किया और पश्चिम की यात्राओं के विषय में जाना। इसी प्रवास के दौरान उन्होंने भारत की यात्रा करने की योजना बनाई। इस उद्देश्य से वह पुर्तगाल के राजा जॉन द्वितीय के पास भी गए लेकिन उन्हें इसकी मंजूरी नहीं मिली। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद, 1484 में वह अपने बालवय बेटे डियेगो के साथ

राजकीय समर्थन हासिल करने स्पेन चले गए। जे.एच. पैरी के अनुसार, 'कोलंबस की सबसे बड़ी विशेषता स्वयं को महान लोगों के बीच रखने की उनकी क्षमता थी।' उनकी एक अवैध संतान थी जिसका नाम फर्डिनेंद था जो अपने पिता का महान जीवनीकार बना। क्रिस्टोफर कोलंबस ने नौकायन के क्षेत्र में शैक्षणिक की अपेक्षा प्रायोगिक योग्यता हासिल की थी। पश्चिम की ओर से यात्रा के माध्यम से भारत की अपनी यात्रा को प्रायोजित करने के लिए यूरोपीय शासकों को विश्वास में लेने में उन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपनी समुद्री यात्राओं के लिए सहायता जुटाने के लिए वह पुर्तगाल, इंगलैंड और स्पेन के शासकों के पास गए। अंततः स्पेन के शासकों ने उनकी यात्राओं को प्रायोजित किया जबकि जेनोआ के साहूकारों ने भविष्य के लाभ की आशा में उन्हें ऋण दिया। मूरों के मोरक्को पलायन होने के कारण स्पेन, कैडिज और सेविले के महत्वपूर्ण बंदरगाह अटे पड़े थे। इस कारण 3 अगस्त 1492 को कोलंबस को विवशतावश अपनी यात्रा पुर्तगाल की सीमा से सटे एक छोटे से बंदरगाह से आरंभ करनी पड़ी। अंततः वह बहामास के छोटे से बंदरगाह पर उतरे। अपने जहाज के साथियों के जबरदस्त विरोध के बावजूद, उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति और सकारात्मक दृष्टिकोण ने उन्हें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में बड़ी मदद की। उनका प्रसिद्ध जहाज पिंटा ने 12 अक्टूबर 1492 की सुबह को भूमि देखा। इस प्रदेश को सन साल्बाडोर नाम दिया गया जिसका अर्थ होली सेवियर अथवा पवित्र रक्षक होता है। यहां से उन्होंने कुछ अन्य स्थानों का पता लगाया जिसमें क्यूबा और हिसपानिया शामिल हैं। उन्होंने वहां के लोगों के सोने की जेवरात को देखकर वहां सोने की उपलब्धता का अंदाजा लगाया और यूरोपीय मालिकों के लिए भविष्य में मजदूरों की आवश्यकता का अंदाजा लगा लिया। स्पेन के शासक ने उन्हें पुरस्कार का आश्वासन दिया। उन्होंने तीन और यात्राएं कीं पर वह अपने प्रयासों का पूरा लाभ नहीं ले सके। 1502 में अपनी चौथी यात्रा पर वह चार जहाजों के साथ निकले तथा होन्डुरास, निकारागुआ और पनामा तटों का पता लगाया। जमैका में उन्हें विद्रोह और जहाज दुर्घटना का सामना करना पड़ा। 1504 में अपनी वापसी के बाद उनके बाकी का जीवन कानूनी लड़ाइयों और अपनी पहली यात्रा के समय शासकों द्वारा किए गए वादों के एवज में प्रतिष्ठा, शक्ति और धन प्राप्त के प्रयास में शासकों को आवेदन भेजने में बीत गया। जीवन के अंतिम कुछ वर्ष उन्होंने आर्थिक तंगी में बिताए और कर्ज लेकर अपने जीवन का निर्वाह किया। 20 मई 1506 में अपने देहावसान से पूर्व उन्होंने अपने पुराने और विश्वासी मित्र डिएगो डी डेजा को लिखा, 'ऐसा लगता है कि सम्राट ने अपनी महारानी के सामने लिखित और मौखिक रूप में मुझसे जो वादे किए थे, वे उन वादों को पूरा करना नहीं चाहते। अब वे राजकीय ठाठ में हैं। इस प्रतिकूलता के विरुद्ध संघर्ष करना मेरे लिए हवा के झोंकों से संघर्ष करने जैसा होगा ...' (आर.एच. मेजर, *सेलेक्टेड लेटर्स ऑफ क्रिस्टोफर कोलंबस, फोर वोयेजेज टू दि न्यूयॉर्क वर्ल्ड*, लंदन, हकलुईट सोसाइटी, 1847)।

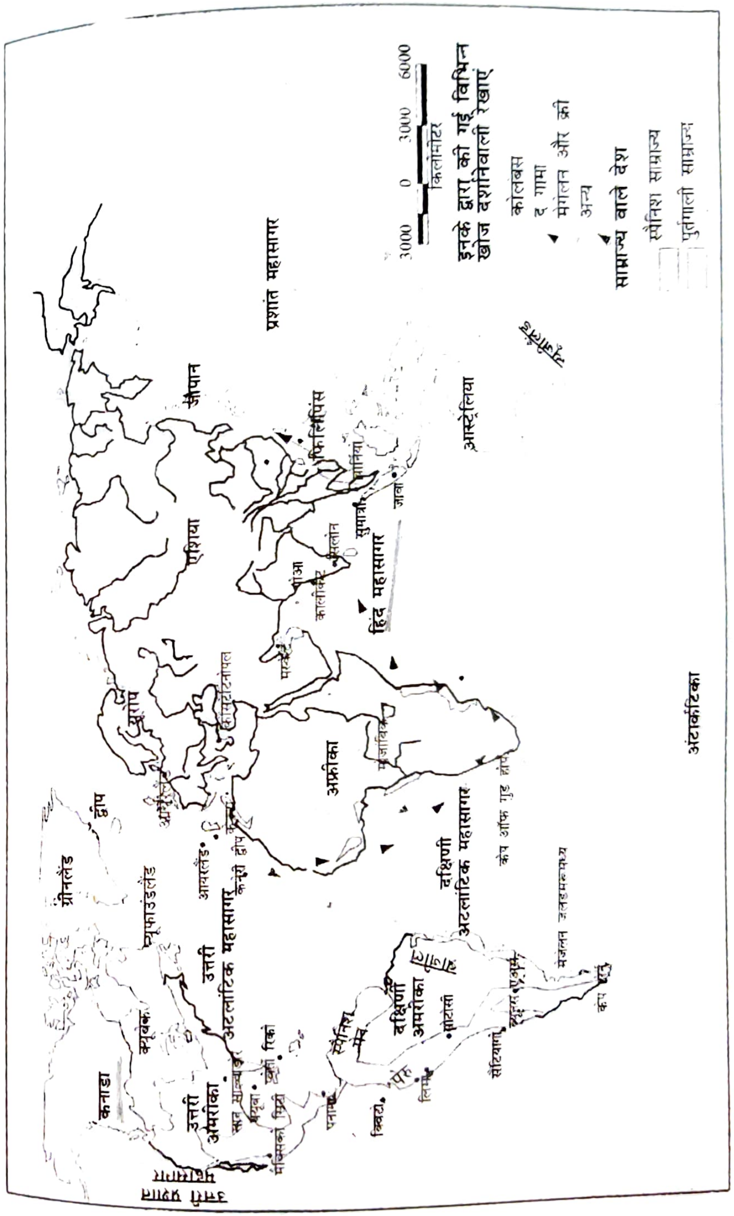

मानचित्र 3.1 : महत्वपूर्ण समुद्री यात्राएं

कोलंबस में दो विपरीत विशेषताएं परिलक्षित होती थीं : मध्य युग के मानव की और पुनर्जागरण की विशेषताओं पर से पर्दा हटाने वाले मनुष्य की। उनकी सैद्धांतिक पृष्ठभूमि, उनका दार्शनिक और नीतिशास्त्रीय दृष्टिकोण और उनकी वैज्ञानिक संकल्पनाएं मध्ययुगीन थीं लेकिन उनकी तीव्र जिज्ञासा, और परिस्थिति की व्याख्या को समझने की उनकी क्षमता, ये सब पुनर्जागरण युग का प्रतिनिधित्व करते हैं (टैविअनी)। कोलंबस स्वयं द्वारा स्थापित उपनिवेश ला इजाबेला (अभी डोमीनिकन गणराज्य के नाम से प्रसिद्ध) के अयोग्य शासक साबित हुए। उन्होंने अपनी बर्बर शक्ति के बल पर तीन वर्षों तक शासन किया और अपनी ही प्रजा से शत्रुता मोल ले ली जिन्होंने उनके खिलाफ विद्रोह किया। अपनी अंतिम घड़ी तक वह यही मानते रहे कि वह भारत पहुंच गए हैं और केंद्रीय अमरीका, जिसे उन्होंने खोजा था, के निवासियों को वह भारतीय बताते रहे। यह बताया जाता है कि कोलंबस ने यूरोपवासियों के लिए विश्व का चौथा हिस्सा—अमरीका—जोड़ा जबकि उनके उत्तराधिकारियों ने प्रशांत अथवा कोई अज्ञात और अकाल्पनिक महासागर का पता लगाया। यह उनके उत्तराधिकारी निकोलस डी ओवेंडो के ऊपर छोड़ दिया गया कि खोजे गए क्षेत्रों का पूर्ण दोहन करने के लिए वह 1502 में अफ्रीकी गुलामों का व्यापार आरंभ करें। इटली के खोजकर्ता अमेरीगो वेसुपुच्ची के नाम पर इन देशों का नाम अमरीका दे दिया गया। वेसुपुच्ची यूरोपीय शासकों के बीच बड़े प्रभावशाली थे। क्रिस्टोफर कोलंबस का महत्व इतना भर नहीं है कि उन्होंने अमरीका की खोज की। उनकी समुद्री यात्राओं का वास्तविक महत्व यह है कि यह वैश्विक एकीकरण का पहला चरण था जिसके बाद पश्चिमी जगत के लोगों ने अपने प्रभाव को विश्व के दूर-दराज के क्षेत्रों तक पहुंचाया।

हाल के कई इतिहासकार कोलंबस को नायक अथवा महान खोजकर्ता के रूप में प्रस्तुत नहीं करते हैं। बल्कि वे उनका वर्णन शोषण और उपनिवेशवाद के प्रतीक के रूप में करते हैं। 19वीं सदी के उनके एक जीवनीकार एजस्टिन विनसर ने उनके जीवन के नकारात्मक पहलू पर प्रकाश डाला है। उन्होंने रोमन कैथोलिकों द्वारा कोलंबस के प्रस्तावित संतघोषणा करने की कड़ी आलोचना की है। अब यह बताया जाता है कि कथित 'खोज का काल' दरअसल उपनिवेशवाद और विध्वंश का एक नया युग था। ये खोज केवल यूरोपवासियों के मतलब के थे क्योंकि खोजे गए ये देश सदियों पहले से मौजूद थे। आज की पीढ़ी के इतिहासकार अमरीका में हुए यूरोपीय हमले को इसी परिप्रेक्ष्य में देखते हैं और यूरोपीय उपनिवेशियों के परिणामों की व्याख्या अमरीका के मूल निवासियों के दृष्टिकोण से करते हैं। वे खोज की नहीं बल्कि अमरीकी दुनिया के साथ यूरोपियों का 'सामना' अथवा 'संपर्क' की बात करते हैं।

पीयर शानु के अनुसार अमरीका के जन्म में तीन प्रकार के अभियानों का योगदान है। पहला, कोलंबस द्वारा अनुसरण किए गए मार्ग से होकर स्पेनवासियों की अमरीकी यात्रा। दूसरा, अधिकतर गैर-भूमध्यसागरीय लोगों जैसे न्यूफाउंडलैंड के खोजकर्ता जॉन सेबास्टियन कैबाट द्वारा पश्चिमोत्तर में बनाए मार्ग की ओर यात्रा। और तीसरा, वेस्ट इंडीज में बनाए गए अड्डे से खोजकर्ता की यात्रा, जिसने आखिरकार औपनिवेशिक साम्राज्यों के निर्माण में अपना योगदान दिया।

इस युग के महान खोजकर्ताओं में एक अन्य प्रणेता का नाम वास्को डी गामा था, जिन्होंने भारत पहुंचने के समुद्री मार्ग का पता लगाया। उनके पिता पुर्तगाली एडमिरल थे और उन्होंने *केप ऑफ गुड होप* की यात्रा की थी। वह इस मामले में भाग्यशाली रहे कि पुर्तगाली शासकों की ओर से उन्हें पर्याप्त सहायता मिली थी। वस्तुतः वास्को डी गामा का अभियान एक सुनियोजित सशस्त्र व्यापारिक अभियान था तथा उनकी पहली समुद्री यात्रा (1497) उनमें से सबसे प्रसिद्ध है। वह बड़े भाग्यशाली रहे कि उन्हें मशहूर अरबी नौकाचालक इबेन मेजीद की सेवा प्राप्त हुई, जिन्होंने 1498 में हिंद महासागर से भारत के पश्चिमी तट पर कालीकट तक उनके नाविक दल की अगुआई की। कालीकट गोल मिर्च की खेती का महत्वपूर्ण केंद्र था। कोलंबस यहां के लोगों के धर्म और उनकी सामाजिक प्रथाओं को लेकर उलझन में थे। कालीकट के शासक समोरिन थे, जो भद्र और सहनशील शासक थे। वास्को डी गामा यहां के हिंदुओं को एक प्रकार का ईसाई समझ बैठे और मंदिरों को भारत का चर्च समझ लिया। भारतीय स्थानीय राजाओं के लिए उन्होंने जो नजराने पेश किए वे उस समय दिए जाने वाले नजराने से निम्न दर्जे के थे और इस कारण उन्हें राजदरबारियों की हंसी का पात्र बनना पड़ा। दूसरी ओर वास्को डी गामा स्वयं क्रूर और निर्दयी व्यक्ति थे। अपनी दूसरी यात्रा के दौरान उन्होंने मक्का से लौटते तीर्थयात्रियों से लदे जहाज को लूटा और पर्याप्त नजराना नहीं देने के कारण उस जहाज को जला डाला। एक अन्य स्थान पर उन्होंने मछुआरों के शरीर के अंगों को काटने का आदेश दिया और अपनी बात मनवाने के लिए और समोरिन को डराने के लिए उन अंगों को कालीकट भेजा। इसके बावजूद उनकी यात्रा इस युग की महानतम समुद्री यात्राओं में से एक है। यह यात्रा कोलंबस की यात्रा से अधिक लंबी थी। इस क्रम में उन्हें दक्षिण में कई अक्षांश पार करने पड़े और कई महासागरीय जलधाराओं और हवाओं का सामना करना पड़ा। उनकी नौकायन की सफलता के परिणामस्वरूप एशिया में समुद्री मार्ग से पहले यूरोपीय साम्राज्य की स्थापना हुई जो जहाजी तोपखानों पर आधारित था। वस्तुतः यह यूरोप द्वारा एशिया को दासता की जंजीर में जकड़ने की शुरुआत थी जो अगले सौ वर्षों तक चलता रहा। विश्व के पश्चिमी भाग में ब्राजील में पुर्तगाली उपनिवेश स्थापित हुआ जिसे केब्राल (1500) ने खोजा था जब उनका जहाज आंधी के थपेड़ों में रास्ता भटक कर अफ्रीका के पश्चिमी तट से दक्षिणी अमरीका के पूर्वी तट पर जा लगा।

कोलंबस, वास्को डी गामा तथा फर्डिनैंड मेगेलन को इस युग के तीन महानतम खोजकर्ताओं के रूप में जाना जाता है। मेगेलन एक पुर्तगाली थे जिन्होंने स्पैनिश अभियान

वास्को डी गामा

समुद्री यात्राओं के खाकाचित्र

अमेरीइंडियन कला

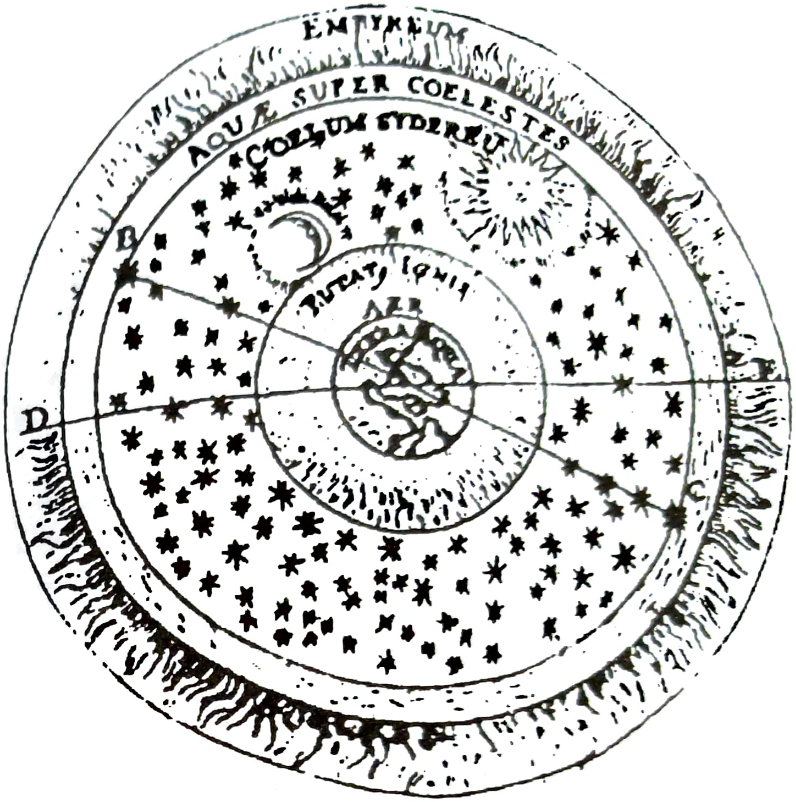

नौपरिवहन चार्ट

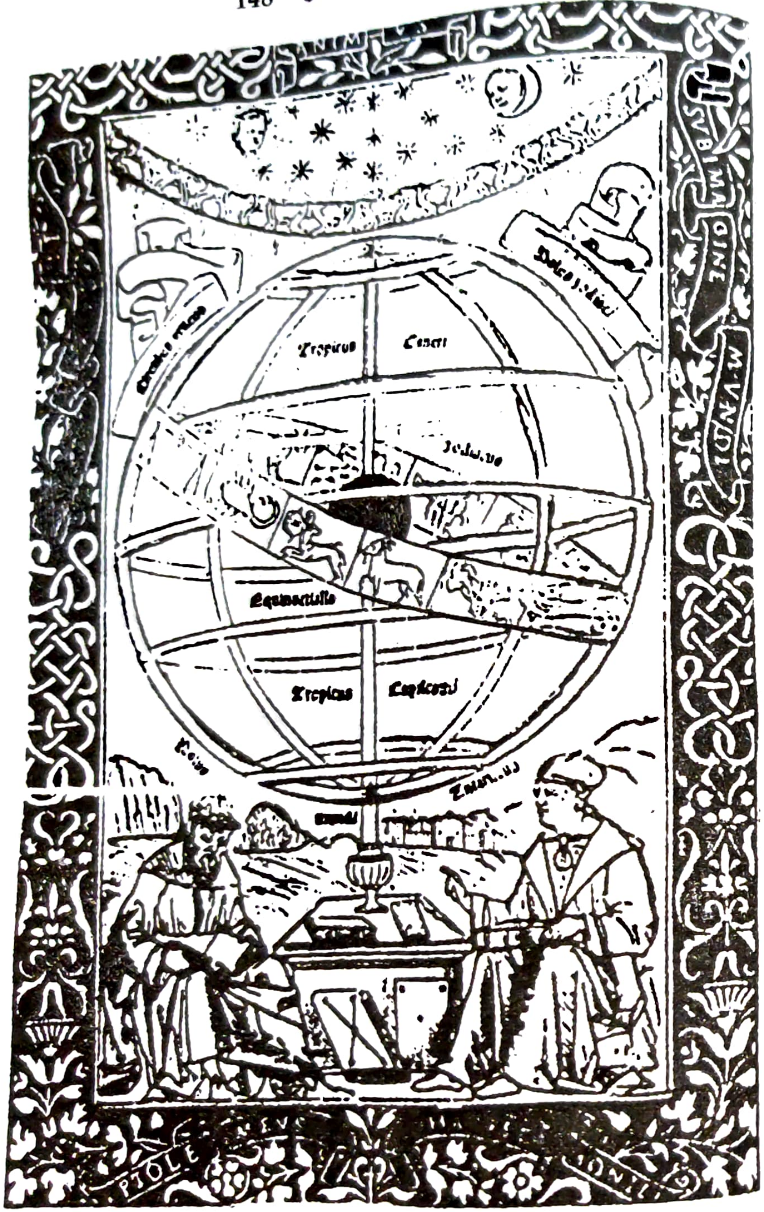

टॉलमी की प्रणाली

दल का नेतृत्व किया था। उनके पिता जमींदार थे और उन्होंने हिंद महासागर में अभियान में भाग लेकर पुर्तगाली साम्राज्य निर्माण में सहयोग दिया था। उन्होंने अल्बुकर्क के अधीन कार्य किया और मलाया प्रायद्वीप में मलक्का पर कब्जा करने में सहायता की। युद्ध के दौरान घायल हो जाने के कारण जीवन के शेष दिन उन्हें अपंग के रूप में बिताने पड़े। उन्होंने स्पेन की सेवा छोड़ दी और मलक्का के लिए स्पेनी शासक चार्ल्स पंचम के अभियान दल का नेतृत्व किया। इसी अभियान के साथ मेगेलन का काम भी उन्हें सौंपा गया था क्योंकि वह मसालों के इस क्षेत्र से परिचित थे। परंतु टार्डेस्सिलास की संधि के शर्तों के कारण उन्हें पश्चिम के रास्ते से यात्रा करनी पड़ी। तमाम कठिनाइयों के बावजूद मेगेलन 1519 में अटलांटिक को पार करते हुए प्रशांत महासागर पहुंच गए। उन्होंने इसका नाम प्रशांत दिया क्योंकि यह अटलांटिक की तुलना में स्थिर और शांत था। वह खतरनाक रास्ते (स्ट्रेट ऑफ मेगेलन, जो मेगेलन के नाम पर है) से होते हुए दक्षिणी अमरीका के बिलकुल दक्षिण चले गए तथा फिलिपींस पहुंच गए। इससे पहले पुर्तगाल की सेवा के क्रम में उन्होंने पूर्व की ओर मलक्का की यात्रा की तथा पुर्तगाली गवर्नर की सेवा की। इस प्रकार वह पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले पहले व्यक्ति बन गए। उनकी यात्रा उनके असाधारण नौकायन कौशल का प्रमाण है। उनकी यात्रा ने इस बात की पुष्टि कर दी कि पृथ्वी गोल है। उनके प्रयासों से ही पहली बार प्रशांत महासागर की विशालता को पहचाना जा सका। परंतु मौक्टन द्वीप पर स्थानीय युद्ध में 40 अन्य लोगों के साथ उनकी मौत हो गई। प्रशांत महासागर को पार करने के क्रम में उन्हें और उनके अभियान दल को चौदह सप्ताह तक भूख, प्यास और सरदी से जूझना पड़ा। 1522 में सेवास्टियन डेल केनो के नेतृत्व में उनका अभियान दल *केप ऑफ गुड होप* होते हुए स्पेन लौटा और इस प्रकार उन्होंने पृथ्वी की परिक्रमा पूरी की। इससे पूर्व 1513 में स्पेन के एक साहसिक नाविक वास्को नुनेज डी बल्बोआ पनामा नहर की भू-संधि तक पहुंचे थे और भूमि के पार प्रशांत महासागर को देखा था।

विभिन्न देशों के कई समुद्र यात्रियों और इसकी अगुआई करने वालों ने भी भूगोल के ज्ञान और विश्व की अवधारणा में अपना योगदान दिया और इस प्रकार उन्होंने यूरोपीय नियंत्रण को अज्ञात क्षेत्रों तक पहुंचाया। इंगलैंड के जॉन कैबोट ने उत्तरी अमरीका की ओर नौका यात्रा की और न्यूफाउंडलैंड (1497) की खोज की। जॉन कैबोट (1450-1499) इटली के मसाला व्यापारी और नाविक थे जिन्होंने राजा हेनरी सप्तम के लिए उत्तरी अमरीका के पूर्वोत्तर तट का पता लगाया, यद्यपि वह एकदम पूर्व से अटलांटिक मार्ग की खोज पर निकले थे। इस व्यापार का एकाधिकार बनाए रखने के लिए ब्रिस्टल के व्यापारियों ने पूंजीगत सहायता की। संभवत: जॉन कैबोट के पुत्र सेबास्टियन कैबोट (1470-1557) ट्यूडरों के अधीन एक नाविक और मानचित्रकार थे। उन्होंने एशिया के मार्ग के लिए पश्चिमोत्तर रास्ते की खोज में लंबी यात्राएं कीं। आगे चलकर उन्होंने स्पेन के सम्राट के

यहां पायलट मैनेजर की रक्षा में कार्य करना शुरू कर दिया। अपने अंतिम वर्षों में वे इंगलैंड के मर्चेंट एडवेंचर (1551) और मस्कोवी (1555) के पहले गवर्नर रहे। फ्रांसीसी जैक कार्टर ने उत्तरी अमरीका में सेंट लॉरेंस नदी की नौका यात्रा की। इस प्रकार उन्होंने कनाडा में फ्रांस की कॉलोनी स्थापित की। चैंपलेन ने क्यूबेक की खोज की जिसके परिणामस्वरूप उत्तरी अमरीका में न्यू फ्रांस का जन्म हुआ। एशिया पहुंचने के लिए पश्चिमोत्तर मार्ग की खोज करने के उद्देश्य से डचों द्वारा रखे गए अंगरेजी नागरिक हेनरी हडसन ने हडसन नदी की खोज की। इसका नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया। इंगलैंड के फ्रैंसिस ड्रेक और हॉकिंस ने भी कई समुद्री यात्राएं की थीं।

औपनिवेशिक साम्राज्य का विकास

नए देशों और क्षेत्रों की खोज के साथ ही औपनिवेशिक साम्राज्यों का विकास आरंभ हो गया। वस्तुतः खोज विजय के साथ मिल गई और विजयों के परिणामस्वरूप औपनिवेशिक साम्राज्य स्थापित हुए। इसी के फलस्वरूप पुर्तगाल और स्पेन के औपनिवेशिक साम्राज्यों की स्थापना हुई। ब्रोदेल के अनुसार, 'उच्च समुद्रों की खोज ने यूरोप को विश्व भर में श्रेष्ठता प्रदान की जो सदियों तक कायम रही।'

पुर्तगाली वर्चस्व यूरोपीय अटलांटिक से लेकर हिंद महासागर तक, ईस्ट इंडीज और प्रशांत महासागर के सामुद्रिक सीमा तक संपूर्ण पुराने विश्व में फैला था जिसे आम तौर पर व्यापारिक वर्ग के स्वार्थ से जोड़ा जाता है जो अपने व्यापारिक केंद्रों से लाभ कमाते थे। परंतु औपनिवेशिक राज्य स्थापित करने की आरंभिक प्रेरणा सामंतवादी समाज से विशेष तौर पर कुख्यात 'छोटे बेटों' जिन्हें भूमि के स्वामित्व में कम हिस्सा मिलता था से निकलकर सामने आई। एक बार उपनिवेशों के अभ्युदय के बाद व्यापारियों और धर्मप्रचारकों की भूमिका बढ़ गई। दूर-दराज में उपनिवेशों की स्थापना में व्यापारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पुर्तगाली औपनिवेशीकरण पूरब में आरंभ हुआ। यह काफी हद तक योजनाबद्ध और शाही उद्यम के रूप में किया गया। अंतिम पचास वर्षों अथवा उसके आसपास के आरंभिक पुर्तगाली प्रयासों के परिणामस्वरूप ही वास्को डी गामा की भारत यात्रा और इंडिया *पोर्तुगीजा* की स्थापना सफल रही। डन ओ सलिवन (पृ. 20) के अनुसार, 'पूरब में पुर्तगाली सफलता का कारण अपने उद्देश्य के प्रति उनका दृढ़ निश्चय, जहाजी तोपखाना और इसका समय निर्धारण था। इस समय हिंद महासागर में एक भी सामुद्रिक शक्ति मौजूद नहीं थी। इसके परिणामस्वरूप, पुर्तगालियों ने एशिया के कई भूभागों में अपना वर्चस्व स्थापित किया और एशिया के मौजूदा समुद्री यातायात में भी अपनी पैठ बनाई। शक्तिशाली नाविक शक्ति और महत्वपूर्ण वाणिज्यिक समुद्री पत्तन पर अपने नियंत्रण के कारण उन्होंने वाणिज्यिक सफलता प्राप्त की। अफ्रीकी तट पर किए गए उनके आरंभिक प्रयासों के पीछे चीनी का

स्वार्थ और गुलामों की मांग काम कर रहा था। एशिया में मसाला व्यापार पर एकाधिकार करने के लिए किए गए प्रयासों में पुर्तगाली गतिशीलता देखने को मिलती है।'

1415 में जिब्राल्टर के सामने मोरक्को के क्वेटा नगर के विजय के साथ ही अफ्रीकी महाद्वीप में पुर्तगाली विस्तार आरंभ हो गया। ला मीना का किला यूरोप का पहला निर्माण था जो गिनी की खाड़ी वाली विषुवतीय क्षेत्र में किया गया था। राजा जॉन द्वितीय के आदेश से वाणिज्यिक केंद्रों को बनाने के लिए 1481 से किलेबंदी का कार्य आरंभ किया गया। यह सोना, हाथी दांत के साथ ही गुलामों के व्यापार की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। वास्को डी गामा की भारत यात्रा के तुरंत बाद ही साम्राज्य स्थापना आरंभ हो गई। मालाबार तट पर स्थित कई राज्य पुर्तगाली प्रभुत्व को रोक पाने में प्रभावहीन साबित हुए। इसी प्रकार, पूर्वी अफ्रीकी तट पर, मिस्र और ईरान ताकतवर राज्य थे लेकिन हिंद महासागर में उनका स्थायी जहाजी बेड़ा नहीं था। इससे पुर्तगालियों का काम आसान हो गया। पुर्तगाली इस बात को जानते थे कि भूमध्यसागरीय व्यापारिक नगर बिचौलियों के माध्यम से एशिया से आने वाले विलासिता संबंधी सामानों पर अपने नियंत्रण के कारण समृद्ध बने हैं। पुर्तगाली अफ्रीका का पूरा चक्कर काट कर लंबी और जोखिम भरी जहाजी यात्रा करके हिंद महासागर में इसलिए पहुंचे ताकि व्यापार में मौजूद बिचौलियों का अस्तित्व मिटाकर भारत और मसाला उत्पादक द्वीपों के साथ सीधा व्यापार संबंध शुरू किया जा सके। 1498 में अपनी सफलता के बाद पुर्तगालियों ने जहाजों और आदमियों को भेजना जारी रखा। वास्को डी गामा और कैंब्रल की सफलता ने यह साफ कर दिया कि मालाबार तट पर बलपूर्वक कब्जा किया जा सकता है। 1505 में राजा मैनुएल ने फ्रांसिस्को डी असमीडिया को भारत का पहला वायसराय बनाकर भेजा। कुछ निश्चित महत्वपूर्ण पत्तनों पर नियंत्रण करके समुद्र मार्ग द्वारा हासिल साम्राज्य स्थापित करने के मामले में पुर्तगालियों ने नई रणनीति का परिचय दिया। अपनी आक्रामक नीति के कारण उन्होंने एशिया के कई बड़े व्यस्त वाणिज्यिक पत्तनों को हासिल करने में सफलता प्राप्त की। पश्चिमी भारत का एक बड़ा बंदरगाह दीव सुरक्षित था। अपनी दूसरी विजय के दौरान, अल्फोंसो डी अल्बुकर्क (1509-15) ने गोवा को बीजापुर के शासक से हथिया लिया। अल्बुकर्क एशिया में पुर्तगाली साम्राज्य के दूसरे वायसराय थे जिन्होंने साम्राज्य स्थापना में अगुआई की। उन्होंने हिंद महासागर के विभिन्न हिस्सों में कई अभियानों को पूरा किया और उन्होंने एशियाई व्यापारियों के हाथों से मसाला व्यापार में स्थापित उनके एकाधिकार को उनसे छीनने की स्पष्ट नीति अपनाई। अल्बुकर्क ने ताकतवर प्रतिस्पर्धियों को उखाड़ फेंकने की नीति अपनाई जिसमें उन्होंने केवल छोटी एशियाई शक्तियों को ही नहीं बल्कि पूरब से स्पेनी अतिक्रमण का भी उन्मूलन किया। उन्होंने पुर्तगालियों को एशिया की स्थानीय राजनीति से अलग रखा और पुर्तगाली व्यापारियों के लिए सुरक्षित समुद्री मार्ग का नेटवर्क विकसित करने पर अपना ध्यान लगाया। इन मार्गों को जहाजी स्क्वाड्रनों द्वारा नियंत्रित किया जाता था

और इसके प्रबंधन का कार्य हिंद महासागर के विस्तृत क्षेत्र में बिखरे जहाजी अड्डों के हाथ में था। गोवा एक महत्वपूर्ण पत्तन था जिसकी आबादी सघन थी और इसमें व्यापारिक वर्ग की बहुलता थी। इस क्षेत्र पर कब्जा करने से पुर्तगालियों को न केवल एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक अड्डा हासिल हुआ बल्कि यहां से उन्हें संपूर्ण पश्चिमी तट को नियंत्रित करने में होने वाली सुविधा का भी लाभ मिला। यह पुर्तगालियों द्वारा स्थापित पहली और बड़ी ही महत्वपूर्ण पत्तन श्रृंखला थी। ईस्ट इंडीज में मलक्का विशेष रूप से मसाले के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था। 1511 में पुर्तगालियों ने इस पर कब्जा कर लिया। 1515 तक, फारस की खाड़ी के उत्तरी हिस्से पर पुर्तगालियों द्वारा ऑर्मुज पर कब्जा कर लिया गया। अल्बुकर्क के उत्तराधिकारियों ने सिलोन जैसे एशिया के विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों को हासिल किया जो विशिष्ट प्रकार के मसालों के उत्पादन का प्रमुख केंद्र था। इस प्रकार पुर्तगालियों ने यूरोप आधारित मसालों के व्यापार पर अपना पूर्ण एकाधिकार कायम कर लिया। इसमें सुमात्रा से काली मिर्च का, सिलोन से दालचीनी, बोर्नियो से कर्पूर, बांदा प्रायद्वीप से जायफल और मेलक्का से लांग का व्यापार शामिल था।

(क) सोलहवीं सदी के दौरान हिंद महासागर में पुर्तगालियों का ही एकमात्र संगठित यूरोपीय वाणिज्यिक और समुद्री उद्यम था। इसे लिस्बन में *इस्तादो दा इंडिया* या *इंडिया हाऊस* के नाम से जाना जाता था। आरंभ में इसमें कारिंदा (फैक्टर), खजांची और तीन लेखक थे लेकिन पदाधिकारियों की संख्या लगातार बढ़ रही थी। यह विदेश व्यापार विभाग की तरह कार्य करता था। साथ ही यह एक विशाल गोदाम और सीमा-शुल्क चौकी का भी काम करता था। यह यूरोप के मसाला बाजार को नियंत्रित और प्रभावित करने के लिए हर संभव साधनों का उपयोग करता था। समुद्री लूटपाट, दस्यु पोत पर कब्जा, और सामुद्रिक युद्ध पुर्तगाली नौसैनिक परंपरा थी। यह एशिया में भी जारी रही। इसने समुद्री विस्तार के साधन का काम किया। इस नौसैनिक श्रेष्ठता ने पुर्तगाली वाणिज्य को अति आवश्यक सुरक्षा दी। जैसा कि नील्स सटीन्सगार्द कहते हैं कि *इस्तादो दा इंडिया* जमीनी सत्ता पर नहीं बल्कि खुले समुद्रों पर अपने आधिपत्य पर निर्भर करता था और यही इसके संप्रभुत्व के दावे का कारण था। (*दि एशियन ट्रेड रिवोल्यूशन इन दि सेवेंटींथ सेंचुरी*, पृ. 89)। संजय सुब्रमण्यम के अनुसार हिंद महासागर में पुर्तगाली हस्तक्षेप की प्रकृति आरंभ में वाणिज्यिक और बाद में सैन्य थी। यह किलवा, होर्मज, गोवा, कन्नोर के किलों की श्रृंखला के निर्माण के रूप में और 1502 में कालीकट में पहली फैक्ट्री की स्थापना के रूप में प्रतिबिंबित होती है। फैक्ट्रियों और किलों की प्रणाली ने एशिया के मसाला व्यापार पर पूर्ण एकाधिकार लाद दिया। (ख) एशिया में पुर्तगाली राजा प्रत्यक्ष रूप से व्यापारिक कार्यों में शरीक थे और उनकी पूरी दिलचस्पी व्यापार तक सीमित थी। उन्होंने प्रादेशिक भूभाग पर कब्जे का दायित्व कभी नहीं उठाया जब तक कि इससे प्रत्यक्ष रूप से उनके खजाने को फायदा न हो रहा हो। (ग) के.एम. मैथ्यू पुर्तगालियों को भारत में उस सांगठनिक ढांचे के निर्माण का श्रेय देते हैं जिसने भावी औपनिवेशिक

शक्तियों के लिए मार्गदर्शक का काम किया। इनमें सबसे महत्वपूर्ण संगठन *कासा दा इंडिया* था। 1800 के पहले पुर्तगाल एकमात्र राज्य था जिसका राजा एशियाई आश्रित राज्यों को प्रत्यक्ष रूप से नियंत्रित करता था। (घ) मालाबार तट पर स्थापित पुर्तगाली तंत्र का प्रधान वायसराय था, जिसका केंद्र गोवा था। पुर्तगाली राजा के प्रतिनिधि के रूप में वह स्थानीय शासकों के साथ वाणिज्यिक करार करता था और भारत में पुर्तगाली व्यापार के समस्त प्रचालन की देख-रेख करता था। कैप्टंस-जनरल वायसराय की सहायता करते थे। प्रत्येक किला एक कैप्टन के अधीन होता था। वह न्याय प्रशासन का भी कार्य देखता था। (ङ) फिर भी, एशिया में उनका प्रशासन भ्रष्ट था और यह स्थानीय लोगों के प्रति अत्यधिक असहिष्णु था। प्रशासनिक कुशलता बहुत कम थी क्योंकि तनख्वाह बहुत कम थी और प्राधिकारी अपने क्षेत्र के कल्याण की परवाह नहीं करते थे।

हिंद महासागर में पुर्तगालियों के वाणिज्यिक उद्यम के लाभ से डच व्यापारी और बैंकर आकर्षित हुए। उन्होंने पुर्तगालियों से मसाले खरीदना शुरू किया लेकिन 1580 में जब हैब्सबर्ग शासकों को पुर्तगाल का सिंहासन विरासत में मिला तो डच ने पूरब में अपने उपनिवेश बनाकर वहां से सीधे व्यापार करना शुरू कर दिया। डच ने एक निजी व्यापारी कंपनी के जरिए पुर्तगालियों पर आक्रमण किया। जावा और मसाला प्रायद्वीपों के शासकों को सशस्त्र संरक्षण देकर इसने उस क्षेत्र में व्यापार पर एकाधिकार कर लिया। हिंद महासागर में डच का राजनीतिक हस्तक्षेप नीदरलैंड की किसी साम्राज्यिक नीति का परिणाम नहीं था बल्कि यह स्थानीय परिस्थितियों से उत्पन्न था।

पश्चिमी गोलार्द्ध में पुर्तगालियों का आगे बढ़ना आरंभ में ही रोक दिया गया था। नए प्रदेशों को लेकर पुर्तगालियों और स्पैनियार्ड्स के बीच भयानक संघर्ष हुए। पोप अलेक्जेंडर षष्ठम ने 1493 में स्पेन के अनुरोध पर अनेक घोषणाएं कीं जिनमें खोजे गए और खोजे जाने वाले सभी द्वीपों और मुख्य भूभागों को कस्तील के राजा को दे दिया गया—वे सभी प्रदेश जो केप वर्डे प्रायद्वीप के 100 लीग्स पर खींची गई काल्पनिक रेखा के पश्चिम भाग में अवस्थित थे। पुर्तगालियों ने इस निर्णय का विरोध किया। अंततः इन दो आईबेरियन शक्तियों ने 1494 में तोर्डेसिलास में एक द्विपक्षीय संधि की इसके तहत विभाजन रेखा को 270 लीग्स और पश्चिम की ओर बढ़ा दिया गया।

पुर्तगालियों द्वारा ब्राजील की खोज और इसके बाद इसे अपना उपनिवेश बनाया जाना औपनिवेशिक साम्राज्य निर्माण की प्रक्रिया का एक रोचक अध्ययन है। ब्राजील में पुर्तगाली साम्राज्य की स्थापना विवाद के घेरे में है। कुछ विद्वानों का मत है कि कैब्रल इस भूभाग पर अपना दावा स्थापित करने के लिए पुर्तगाली राजा का गुप्त निर्देश लेकर आए थे। जबकि आम धारणा यह है कि कैब्रल विषुवत प्रशांत क्षेत्र (डोल्ड्रम) से बचने के चक्कर में रास्ता भूल गए और संयोगवश ब्राजील पहुंच गए। उन्होंने तुरंत अपनी खोज के बारे में लिस्बन के शासक को एक रिपोर्ट भेजी। शीघ्र ही उपनिवेश निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई, यद्यपि

इस भूभाग के बारे में कोई खास जानकारी उपलब्ध नहीं थी। यह क्षेत्र स्पष्ट रूप से ग्रामीण था। यहां कृषि संसाधनों के विकास के लिए बड़ी संख्या में दास लाए गए। कई नई फसलों जैसे तंबाकू, कॉफी, कहवा, कपास और गन्ने की खेती शुरू की गई। इस उपनिवेश में बहुत बड़ी-बड़ी ग्रामीण जागीरें थीं। श्वेत आबादी बहुत कम थी। धातुओं की उपलब्धता नहीं के बराबर थी और इसलिए पुर्तगाली ब्राजील की कृषि संपदा का दोहन करके संतुष्ट थे। अफ्रीका में दास व्यापार पर पुर्तगालियों के नियंत्रण से इन्हें बाहर से मजदूर लाने में मदद मिली। जे.एच. पैरी के अनुसार 1580 तक ब्राजील में साठ चीनी मिलें थीं। 1570 में ब्राजील का चीनी का उत्पादन लगभग 2,915 टन था जो 1600 तक बढ़कर कोई लगभग 19,434 टन हो गया। ब्राजील में चीनी के बढ़ते उत्पादन का साओ थोम और मैडिराज के चीनी उत्पादक क्षेत्रों पर गंभीर प्रभाव पड़ा। इन क्षेत्रों में पहले चीनी का बहुत अधिक उत्पादन होता था। परिणामस्वरूप, चीनी उत्पादन के स्थान पर मीठी शराब का विनिर्माण किया जाने लगा। पुर्तगालियों की जनसंख्या लगभग 20,000 थी जबकि दासों की आबादी लगभग 14,000 थी। 1530 के दशक में ब्राजील में पुर्तगालियों का विस्तार इसे उपनिवेश बनाने के फ्रांसीसियों के प्रयास का विरोध करने के लिए तेजी से बढ़ा। ब्राजील को 12 सूबों (कैप्टेंसी) में बांट दिया गया; हर सूबा जमींदारों को दिया गया जिन्हें *दोनातारियोज* कहा जाता था। उनसे यह आशा की जाती थी कि वे नए प्रदेश बसाएंगे और अपने भूभाग की रक्षा अपने खर्च पर करेंगे। बदले में उन्हें उन उपनिवेशिकों पर व्यापक प्रशासनिक, न्यायिक और वित्तीय शक्तियां दी जाती थीं जिन्हें बसने के लिए वे प्रेरित कर सकते थे। इस क्षेत्र में पुर्तगाल की नीति स्पेन की नीति की तुलना में कम महत्वाकांक्षी और कम प्रभावी थी। कैप्टेंसी (सूबा) प्रणाली शाही सत्ता की कमजोरी और सांगठनिक अक्षमता दरशाती थी।

पुर्तगाली उपनिवेशी समाज तीन मानकों पर आधारित था : खून की शुचिता, सामाजिक दर्जा और वैवाहिक स्थिति। पुर्तगाल में जन्मे लोग (जिन्हें *रीनोज* कहा जाता था) सर्वोच्च पद पर होते थे। एशिया में जन्मे लोग (जिन्हें *कास्तियोज* कहा जाता था) और अफ्रीका में जन्मे लोग (जो *मुलातोज* कहलाते थे) दूसरे दर्जे पर थे और देसी ईसाई लोग सबसे निचले दर्जे पर। उपनिवेशों में पुर्तगाली आबादी तीन वर्गों में विभाजित थी। इनमें चर्च के अधिकारी, कुलीन और सर्वसाधारण विवाहित और अविवाहित पुरुष थे। अविवाहित पुरुष को *सोल्दातो* कहा जाता था। उन्हें सैन्य सेवा करनी पड़ती थी और *फिदालो* (छोटे कुलीन वर्ग के लोग) द्वारा दिए जाने वाले दान पर निर्भर करना पड़ता था। *सोल्दातो* की जब तक शादी नहीं हो जाती, उसे नियमित वेतन नहीं दिया जाता था। *सोल्दातोज* कुलीनों की निजी सेना का काम करते थे, यद्यपि उनकी नियुक्ति औपनिवेशिक प्रशासन के लिए की जाती थी। अतः *सोल्दातोज* सामंती सेना के घटक थे जिनकी निष्ठा विभाजित थी। कम वेतन के कारण इन्हें कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता था।

कोलंबस द्वारा अमरीका की खोज के बाद स्पैनिश औपनिवेशिक साम्राज्य पश्चिमी गोलार्द्ध में केंद्रित था। एशिया में फिलिपींस को छोड़कर स्पैनिश औपनिवेशिक साम्राज्य मध्य और दक्षिण अमरीका और वेस्ट इंडीज तक फैला हुआ था, जिसे 'नई दुनिया' कहा जाता था। इस क्षेत्र की स्पैनिश आबादी में ग्रामीण किसान और मजदूर शामिल नहीं थे बल्कि स्पैनियार्ड्स उनके खिलाफ पूर्वाग्रहग्रस्त थे। उनमें व्यापारियों और दुकानदारों के अलावा बहुत बड़ी संख्या में अधिकारीगण, वकील, नोटरी, भूमि-मालिक, खदान-मालिक, पादरी आदि थे। यह अनिवार्य रूप से एक शहरी साम्राज्य था जो उन प्रदेशों तक सीमित था जो खदानों और धातुओं के लिए जाने जाते थे।

स्पेन के औपनिवेशिक साम्राज्य की अनेक सामान्य विशेषताएं थीं लेकिन इनमें सबसे महत्वपूर्ण इसका शहरी चरित्र था। बस्तियां काफी बिखरी थीं। इनका शहरी नेटवर्क अल्पविकसित था। इनकी आबादी का विचित्र संकेंद्रण और बिखराव था। ये बस्तियां ऐसी प्रशासनिक सत्ता द्वारा नियंत्रित होती थीं जिसकी डोर स्पेन में थी। यों कहें कि यह कस्तील के स्पैनिश समाज का प्रतिरूप था। जहां पुर्तगाली साम्राज्य में राजा साम्राज्य निर्माण की प्रक्रिया में शुरू से ही प्रत्यक्ष रूप से शामिल था, वहीं स्पैनिश साम्राज्य का आरंभ निजी प्रयासों से हुआ और बाद में स्पेन के राजा ने इस पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। नई दुनिया में स्पैनिश उपनिवेश का निर्माण बड़ी संख्या में आप्रवासियों के आने से हुआ। अलग-अलग लोगों, परिवारों ने नई दुनिया में आप्रवास किया। इनका अलग-अलग उद्देश्य था जैसे बड़े पद पर तरक्की पाना और धन कमाना, स्पैनिश कानून से बचना आदि। वहीं अनेक मिशनरियां अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाने के लिए ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए भी आईं। लेकिन उनमें से अधिकांश की इच्छा धन-दौलत कमाने की या अपनी राजनीतिक सत्ता स्थापित करने की थी। इनमें से स्पैनिश साम्राज्य के निर्माण में सबसे बड़ा योगदान स्पैनिश साहसिक विजेताओं का था।

स्पैनिश साहसिक विजेताओं का युग

कोलंबस द्वारा नए भूभाग की खोज और सोने के नमूनों की प्रस्तुति ने इस अफवाह को हवा दे दी कि नए भूभाग से अपार धन-संपदा हासिल की जा सकती है। स्पेन से सर्वाधिक महत्वाकांक्षी और साहसिक लोग अपनी मातृभूमि को छोड़ उन भूभागों की तलाश में निकल पड़े जिन्हें वे खुद अपने अधीन कर सकते थे। इसके साथ ही साहसिक विजेताओं का युग शुरू हुआ। इन लोगों ने अधिकांश अमरीकी भूभागों पर कब्जा कर लिया। ये लोग पेशेवर अन्वेषक थे। 1520 और 1550 के बीच नए भूभागों में इनकी खोजों से काफी विशाल अज्ञात भूमि इनके नियंत्रण में आ गई। विजय की यह प्रकिया 1519 में हरनांदो कोर्ते द्वारा शुरू की गई। उनके अधीन 600 लोग थे। उन्होंने समस्त एजटेक साम्राज्य को अपने

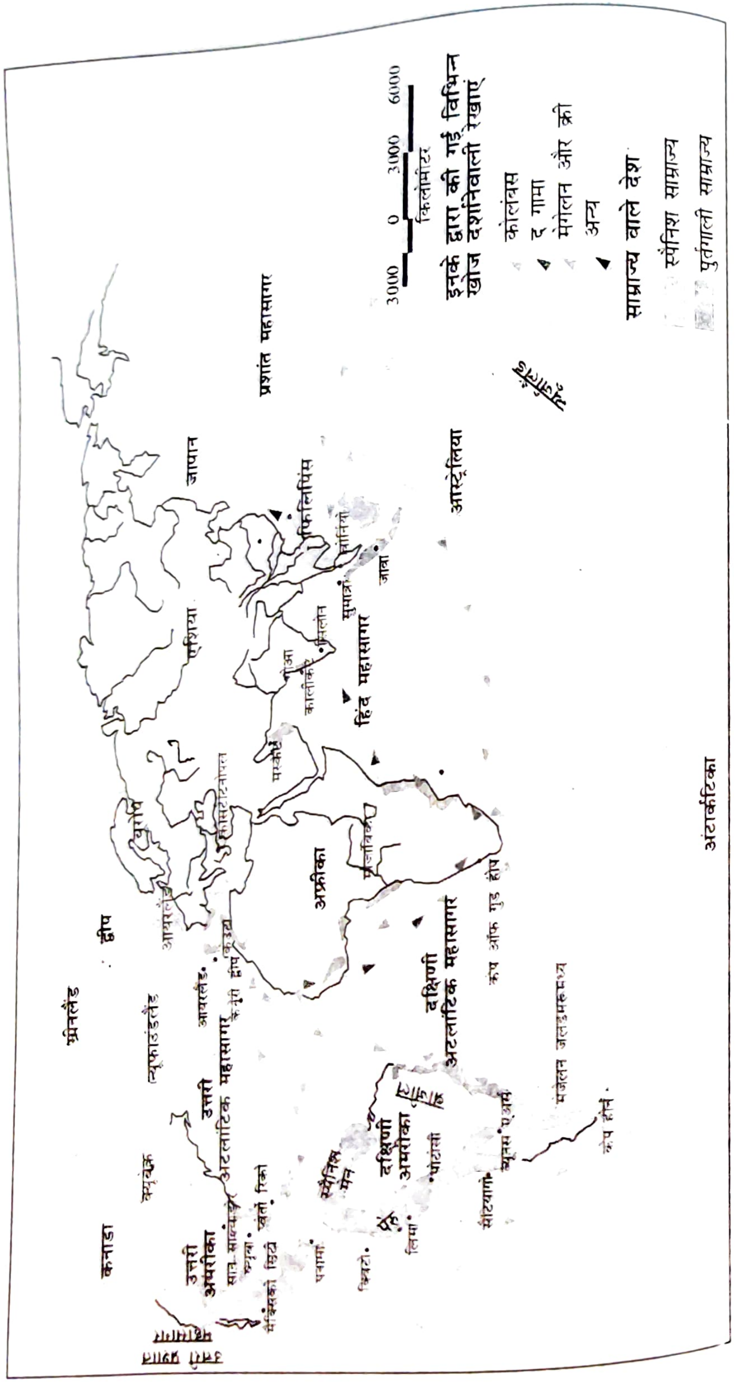

मानचित्र 3.2 : पुर्तगाल और स्पेन के औपनिवेशिक साम्राज्य

अधीन कर लिया। कोर्ते दक्षिण पश्चिम स्पेन के रहने वाले थे। वह अभिजात वर्गीय परिवार से थे लेकिन वित्तीय रूप से संपन्न नहीं थे। उन्हें 1504 में वेस्ट इंडीज में नई दुनिया का बहुत कम अनुभव था। यहां वह क्यूबा के गवर्नर के अधीन कार्यरत थे। उन्हें नई दुनिया में एक नए भूभाग की खोज करने के लिए कहा गया लेकिन क्यूबा छोड़ने के लिए उन्हें मजबूर कर दिया गया क्योंकि स्पेन की सत्ता उन पर विश्वास नहीं करती थी। वहां से वह एक विद्रोही के रूप में अपने अधीन सेना की एक छोटी टुकड़ी लेकर मैक्सिको के लिए चल पड़े। कोर्ते अतिमहत्वाकांक्षी, बहादुर और सुशिक्षित थे और उन्हें प्रशासनिक अनुभव भी था। वह जटिल प्रकृति के थे और उनके समकालिक उन्हें धूर्त व्यक्ति बताते हैं। उनके बारे में और उनके साहसिक कारनामों के बारे में बहुत कुछ लिखा गया है। 1519 में वह मैक्सिको में एक स्थान पर उतरे जिसे उन्होंने वेरा क्रूज नाम दिया। उन्होंने अपनी कार्रवाई पहले उन जहाजों को नष्ट करके शुरू की जिनमें वे आए थे। इसके द्वारा उन्होंने अपनी सेना के असंतुष्ट तत्व जो क्यूबा लौटना चाहते थे को समाप्त कर दिया। कोर्ते ने अपनी सेना के साथ-साथ जहाजों के नाविकों को भी साथ ले लिया। उन्होंने नगरपालिका की भी नींव रखी। क्यूबा में प्राप्त अपना अधिकार पत्र उन्होंने इस शहर के मजिस्ट्रेटों को दे दिया। कोर्ते ने मैक्सिको में भी उनसे स्पेन के राजा के प्रतिनिधि के रूप में नया अधिकार पत्र प्राप्त किया और सम्राट से इसकी पुष्टि प्राप्त की। इस कार्य के जरिए उन्होंने अपना स्वतंत्र कमान स्थापित किया। स्पेन के लोगों के साथ विनाशकारी चेचक की महामारी भी आई जो स्थानीय लोगों में फैल गई। कोर्ते ने इसे चोट करने का सही अवसर पाया। वहां पहुंचकर वह दोना मारिना नाम की एक मैक्सिकन महिला से मिले। वह उसकी दुभाषिया और उपपत्नी बन गई। वह एजटेक साम्राज्य की आंतरिक कमजोरियों और भौगोलिक परिवेश से परिचित थी। एजटेक शासक मोक्टेजूमा ने जब यह सुना कि स्पैनियाड्र्स टेनोकतितलान पहुंचने वाले हैं तो उन्होंने अपने राजदूतों को सोना, चांदी व अन्य उपहारों के साथ भेजा। यह विदेशियों (स्पैनियाड्र्स) की श्रेष्ठता स्वीकार करने के इरादे से नहीं बल्कि अपने धन के प्रदर्शन के जरिए अपनी श्रेष्ठता की नुमाइश करने के इरादे से किया गया था। वहीं कोर्ते ने समझा कि यह उसका आधिपत्य स्वीकार करने की कार्रवाई थी। स्पेन के शासक को भी यही सूचना दी गई। अनेक स्थानीय इंडियंस मोक्टेजूमा के शासन से नाखुश थे और उसके खिलाफ हो गए थे। कोर्ते ने इनकी मदद से एजटेकस के साम्राज्य पर हमला किया। उन्होंने एजटेक के लोगों और उनके सम्राट को धोखे से न केवल हराया बल्कि उनकी खूबसूरत राजधानी टेनोकतितलान को नष्ट भी कर दिया। उसके सहचरों ने इस शहर को असाधारण और बहुत खूबसूरत बताया है। इसमें कोई 60,000 घर थे। इसके चारों ओर एक विशाल झील थी। सभी घर सफेद रंग से रंगे थे। शहर पर कब्जा कर इसे नष्ट कर दिया गया और इसके स्थान पर एक नया शहर बसाया गया जिसे मैक्सिको सिटी कहते हैं। कोर्ते एक ऐसे प्रदेश के निरंकुश शासक बन गए जो आकार में स्पेन से काफी बड़ा था। 1522 में स्पेन के

सम्राट चार्ल्स पंचम ने उन्हें 'न्यू स्पेन' का गवर्नर बना दिया।

एक अन्य साहसिक विजेता फ्रैंसिस्को पिज़ारो थे। वह स्पेन से केवल 180 लोगों को लेकर चले। कोर्ते के विपरीत वह निरक्षर थे; उनमें प्रशासनिक क्षमता की कमी थी। उनकी उम्र 55-60 के बीच थी लेकिन वह मजबूत इरादे के, साहसी, धैर्यवान और उद्यम से भरे थे। वह बबोआ की सेना में काम करते थे और दास अभियान में शामिल थे। पनामा शहर की स्थापना में भी वह शामिल थे। यहां उनके पास एक छोटी सी जागीर थी। उन्हें दक्षिण अमरीका के पश्चिमी तट पर इंका सभ्यता के बारे में पता चला। साथ ही कुछ अमरीकी इंडियंस से सहायता मिली जो इंका शासन को अपदस्थ करना चाहते थे। उत्तराधिकार को लेकर वहां पहले से ही गृह-युद्ध की स्थिति बनी हुई थी। इस आंतरिक कलह का लाभ उठाकर पिज़ारो ने इंका शासन को उखाड़ फेंका और पेरू में अपनी सरकार की स्थापना की। 1533 में उसने इंका सभ्यता को खूब लूटा। कहा जाता है कि यहां सोना बहुत अधिक मात्रा में उपलब्ध था। स्पेनवासियों ने बाद में इस क्षेत्र में पोटोसी की चांदी की खानों को खोजा। यह स्पेन को चांदी की आपूर्ति का बहुत महत्वपूर्ण केंद्र साबित हुआ। उपनिवेश पर विजय प्राप्त करने के पहले ही चार्ल्स पंचम ने उसे वहां का गवर्नर बना दिया। उसके जैसे अन्य भी थे जैसे अलवार्दो, जिसने ग्वाटेमाला जीता और क्विसाडा जिसने न्यू ग्रेनाडा पर अपनी सत्ता कायम की। उनकी ये जीतें साहसिक और सफल मानी जा सकती हैं लेकिन ये धोखे और क्रूरता पर आधारित थीं। वर्तमान समय के विद्वानों ने उनके विजयों की विनाशकारी प्रकृति को उजागर किया है। उन्होंने केवल अपने लिए लड़ाई की न कि स्पेन के लिए। जब स्पेन के राजा ने इन प्रदेशों का महत्व समझा तो उन्होंने तुरंत उन पर सरकारी नियंत्रण स्थापित करने का निर्णय किया। नई दुनिया में औपनिवेशिक विकास में चांदी उत्खनन की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी। स्पेन के राज्य में बहुत-से अर्द्ध-स्वतंत्र प्रदेशों को जोड़ने वाले और भी कई थे जैसे अल्बोरैडो, आलिड और सैंडोवल। दरअसल अमरीकी मुख्यभूमि पर कब्जा करने वाला पहला महत्वपूर्ण विजेता वास्को नूनिज डि बाल्बोआ था। वह 1500 ई. में समुद्री यात्रा पर निकला और डैरियन शहर की खोज की। इस जलडमरूमध्य की स्थानीय आबादी पर उसकी सफलता उस सामरिक नीति पर आधारित थी जिसमें शक्ति, भय और राजनय शामिल थे। कहा जाता है कि 1513 में वह सघन जंगल पार करके प्रशांत महासागर के तट पर पहुंच गया। बाल्बोआ ने ही अटलांटिक और प्रशांत को अलग करने वाली पतली सी भूमि की पट्टी की मौजूदगी के बारे में जानकारी दी। फिर भी वह अपनी खोज का लाभ नहीं उठा सका क्योंकि राजा तक उसकी रिपोर्ट बहुत देर से पहुंची और उस समय तक अरियास डि एविला को पहले ही डैरियन का शाही गवर्नर नियुक्त किया जा चुका था।

स्पेन के साहसी विजेताओं ने उल्लेखनीय तीव्र गति से अमरीकी सभ्यता के सभी प्रमुख केंद्रों में अपनी पैठ बना ली। उनकी सफल प्रादेशिक विजयों की तुलना पूरब में पुर्तगाली व्यापारिक उन्नति से की जा सकती है। फिर भी स्पेन के इन अभियानों का परिणाम

अपेक्षाकृत अधिक दूरगामी था। इसने बाहरी दुनिया से समस्त यूरोपीय संबंध को बदल दिया। इसका यूरोप की सभ्यता पर भी व्यापक प्रभाव पड़ा। स्पेन के विजेताओं का शासनकाल संक्षिप्त था लेकिन इसने गंभीर समस्याएं पैदा कर दीं। वे अमरीकी भूमि पर गए थे, अपने खर्चों का वहन किया था, वास्तविक कठिनाइयों का सामना किया और अपनी सरकार की मदद के बिना युद्ध लड़ा। उन्होंने उन भूभागों पर कब्जा किया जो क्षेत्रफल की दृष्टि से उनके अपने देश से कहीं अधिक बड़े थे।

एक अन्य संस्था जो स्पेन के आधिकारिक और अनाधिकारिक हलकों में गंभीर विवाद का विषय बन गई वह *इनकोमिएंदा* (मजदूरों की न्यास प्रणाली) थी। इसके दुरुपयोग और दमन के कारण स्पेन के शासकों ने अंततः इसे नामंजूर कर दिया, यद्यपि आरंभ में शाह फर्डिनैंड ने इसकी मंजूरी दे दी थी। 1509 में उन्होंने एक अध्यादेश को विधायी स्वीकृति दी जिसमें यह व्यवस्था दी गई थी कि किसी नई जीत के पूरा होने पर गवर्नर या *एदिलांतेदो* विजित क्षेत्र के मूल निवासियों को विजेताओं के बीच बांट सकते थे। इस संस्था ने इंडियंस के समूहों को स्पेनवासियों को प्रदान कर दिया और उन पर यह बाध्यता लाद दी गई कि स्पेनवासी उनकी सेवाओं का उपयोग अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं। स्पैनिश उपनिवेशों में शक्तिशाली भूस्वामी को *इनकमेंदेरो* कहा जाता था। उसे एक अनुदान या *इनकोमिएंदा* दिया जाता था जिसमें मूल निवासियों या आदिवासियों की कुछ संख्या होती थी। उनसे यह आशा की जाती थी कि वे *इनकमेंदेरो* के अधीन भूमि पर या खदानों में काम करेंगे। सिद्धांत रूप में *इनकमेंदेरो* से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे विजित लोगों को सुसभ्य और ईसाई बनाएंगे। वहीं जो इंडियंस स्वेच्छा से ईसाई बनना स्वीकार कर लेते थे उनसे स्वतंत्र लोगों के रूप में व्यवहार किया जाता था। फिर भी विजेता मूल निवासियों को अपनी निजी संपत्ति मानते थे। कोर्ते का दावा था कि मैक्सिको में उसके अधीन 1,15,000 लोग हैं वहीं पिज़ारो पेरू में 20,000 लोगों के अपने अधीन होने का दावा करते थे। इन लोगों की स्थिति बेहद खराब और दयनीय थी, खास तौर पर उनकी जो खदानों में काम करते थे। इस प्रकार इंडियंस को स्पेनवासियों का स्थायी तौर पर गुलाम बना दिया गया। नई दुनिया और स्पेन के भीतर भी इसके खिलाफ गंभीर आपत्तियां थीं क्योंकि इसे दास प्रथा से भी बदतर समझा जाता था और हर संभव मायने में अमानवीय माना जाता था। इससे इंडियन आबादी के लिए गंभीर कठिनाइयां उत्पन्न हो गईं और परिणामस्वरूप उनकी संख्या तेजी से घटने लगी। सोने की खोज की सनक में मालिकों द्वारा शेष जीवित मजदूरों के साथ बुरा व्यवहार जारी रहा। स्पेन के अधिकारियों और वहां से आए डोमिनिकन मिशनरियों ने इस शोषण के खिलाफ वातावरण बनाना शुरू किया। माना जाता है कि विजय-पूर्व अवधि में मध्य भागों में मैक्सिकन आबादी करीब 10 से 12 मिलियन थी जो सोलहवीं सदी के मध्य में घटकर लगभग 06 मिलियन हो गई। सत्रहवीं सदी के आरंभ में यह आबादी पुनः घटकर एक मिलियन से भी कम रह गई। कैरीबियाई प्रायद्वीप में अमेरी-

इंडियन आबादी इतनी तेजी से घटी कि कृषि बागान अर्थव्यवस्था (प्लांटेशन इकानॉमी) को अफ्रीका से बड़ी संख्या में दासों का आयात करना पड़ा। दास मजदूरों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई और उनमें से कई को होंडूरस की खदानों में काम करना पड़ता था। स्पेन के शासक ने इसे 1512 में बार्गोस के कानूनों से रोकना चाहा लेकिन यह प्रयास सफल नहीं हुआ। इंडियन प्रजा पर *इनकमेंदेरोज* के अधिकारों को परिभाषित करने की एक कोशिश की गई और इन अधिकारों को अधिकाधिक सीमित कर दिया गया। 1526 और 1529 के बीच महत्वपूर्ण अध्यादेशों में संशोधित *इनकोमिएंदाज* से आशा की जाती थी कि वे इंडियंस को स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में देखें। उन्हें निकाला या उनके साथ दुर्व्यवहार या किसी तीसरी पार्टी को सौंपा नहीं जाए।

स्पेन के सम्राट के सामने अनेक चुनौतियां थीं। उसे न केवल विशालकाय नौकरशाही, नव आगंतुक स्पेनवासियों और मूल निवासियों के निरीक्षण की आवश्यकता थी बल्कि अनेक साहसिक उद्यमियों की गतिविधियों पर भी नियंत्रण रखना था जो स्पेन के राजा के नाम पर नए प्राप्त प्रदेशों के मालिक बन बैठे थे। सम्राट का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य नए प्रदेश की धन-संपदा खास तौर पर सोना और चांदी का पूरा-पूरा दोहन करना था। स्पेन का राजतंत्र औपनिवेशिक प्रशासन का प्रधान था। इसने निजी उद्यमियों की गतिविधियों को रोकने का प्रयास किया। स्पेन के कुछ इतिहासकार कहते हैं कि इजाबेल आरंभ में अमेरीइंडियंस को गुलाम बनाने के खिलाफ थी और उसने धर्मांतरणों की प्रकृति को भी अस्वीकार कर दिया था लेकिन दूरी और नई दुनिया में आकर बसे स्पेनवासियों द्वारा उनकी अवज्ञा के कारण सम्राट का प्रभाव बहुत सीमित हो गया था। ऐसी स्थिति में स्थानीय प्रशासन ने लोगों के जीवन में अहम भूमिका अदा की। 1535 तक स्पेन के औपनिवेशिक प्रशासन का धीरे-धीरे विकास हो गया। इसकी मूल संरचना *रिकंक्विस्ता* (स्पेनी साम्राज्य में मुसलिम क्षेत्रों पर पुन: अधिकार स्थापित करने की प्रक्रिया) के दौरान स्पेन में विकसित संस्थाओं के प्रतिमानों पर आधारित थी। *इनकोमिएंदा* के प्रति संतुलन और कमजोर करने के लिए सम्राट ने 1530 के दशक में एक संस्था का निर्माण किया जिसे *कोरिजिमिएंटोज डि इंडियोज* कहा जाता था। सभी मूल निवासियों को *कोरिजिदोर्स*, यानी शाही अधिकारियों के अधीन रखा गया। अत: श्रम सेवाओं और मूल निवासियों के करों के उपयोग राजा के लिए *इनकमेंदेरोज* के स्थान पर शाही अधिकारियों द्वारा किए जाते थे। ये अधिकारी अपने संबंधित *कोरिजिमिएंतोज* में न्याय भी करते थे। इस संस्था का मुख्य लाभ यह था कि *इनकमेंदेरोज* के प्रभाव और शक्ति पर नियंत्रण हो गया।

1520 और 1530 के दशक में स्पेन के राजा ने मैक्सिको और महाद्वीप के अन्य उपनिवेशों में *इनकोमिएंदा* (श्रम न्यास प्रणाली) प्रणाली को रोकने का असफल प्रयास किया। उन्होंने इसका विरोध इसलिए किया क्योंकि इसके परिणामस्वरूप एक सामंती कुलीन वर्ग का निर्माण हो गया था, जिनकी स्वतंत्र सत्ता और आय थी। वे शाही सत्ता और

राजस्व को चुनौती देते थे। 1540 के दशक से स्पेन के सम्राट ने निजी स्पैनिश उद्यमियों द्वारा हासिल प्रदेशों के नियंत्रण में अपेक्षाकृत अधिक रुचि लेना शुरू कर दिया और औपनिवेशिक साम्राज्य को प्रभावी संगठन का रूप देना शुरू किया। इस समय तक स्पेन के साम्राज्य में मैक्सिको, टेक्सास, पेरू, चिली, क्यूबा, हिस्पैनियोला, त्रिनिदाद, फ्लोरिडा और दक्षिण अमरीका के एक बड़े भूभाग शामिल हो गए थे। 1542 में औपनिवेशिक संहिता जिसे 'इंडीज के नए कानून' के रूप में जाना जाता है, द्वारा आप्रवासियों के विशेषाधिकारों में काफी कटौती कर दी गई। इससे स्पेन के आप्रवासी स्तब्ध रह गए। वे राज्य की नीति में आए बदलाव से अचंभित थे। शायद पेरू के कब्जे के बाद हिंसा और अराजकता की खबरों ने सम्राट को शाही कानून सख्ती से लागू करने पर मजबूर कर दिया। नए कानूनों की एक व्यापक संहिता थी। इसके अनुच्छेद 31 और 35 द्वारा *इनकोमिएंदा* प्रणाली समाप्त कर दी गई लेकिन 1549 में न्यू स्पेन और ग्वाटेमाला में इसे पुन: मान्यता दे दी गई। इन नियमों को लागू करने के लिए औपनिवेशिक सरकार के प्रमुख केंद्रों पर विशेष आयुक्त भेजे गए जिन्हें इन आदेशों का पालन नहीं करने वाले अधिकारियों को हटाने की व्यापक शक्तियां प्राप्त थीं। ये अधिकारी *विजितेदर* कहलाते थे। सोलहवीं सदी के मध्य तक स्पेन की जो औपनिवेशिक संरचना बनकर उभरी उसमें संस्थाओं का एक पदसोपान था। इसे मातृ देश द्वारा सख्ती से नियंत्रण किया जाता था। इसमें सत्ता के दो स्तर थे। एक जो स्पेन में परिषदों के नियंत्रण के रूप में बनाया गया और दूसरा जो नई दुनिया में उभरा। नई दुनिया में, जिसमें मध्य अमरीका और वेस्ट इंडीज शामिल थे, नगरपालिका प्रशासन की प्रणाली विकसित हुई जो शाही और निजी हितों के पारस्परिक समन्वय पर आधारित थी। नगरपालिकाएं विशाल प्रदेशों को संगठित करने, जमीन व अन्य संसाधनों के वितरण और उच्छृंखल विजेताओं को शाही सत्ता स्वीकार करवाने के तरीके मुहैया कराती थीं। नगर (म्यूनिसिपल) प्रशासन प्रादेशिक क्षेत्राधिकार की पहली और मूल इकाई भी था। वैध और नामांकित गृहपति *वेसिनोज* कहलाते थे जो बारह *रेजिदोर्स* का चुनाव करते थे। इनमें से दो *एलकाल्देस* या नागर (म्यूनिसिपल मजिस्ट्रेट) चुने जाते थे। शाही सरकार *रजिडेंसीज* भेजती थी जो न्यायाधीशों और वरिष्ठ प्रशासकों और न्यायिक अधिकारियों के कार्यों की समीक्षा करती थीं। *विजिटा* पूरे प्रदेश और अधिकारियों का गुप्त निरीक्षण करते थे। स्पैनिश उपनिवेश वायसराय या गवर्नर के अधीन शासित क्षेत्रों में बंटे हुए थे। कप्तान और *कोरिजेदार्स* (शाही अधिकारी) इनकी सहायता करते थे। ये सभी संस्थाएं स्पेन की प्रधान औपनिवेशिक सत्ता, जिसे इंडीज परिषद (काउंसिल ऑफ इंडीज) कहा जाता था, द्वारा नियंत्रित होती थीं। इंडीज परिषद का निर्माण 1524 में किया गया था। यह एक अन्य परिषद *कासा दि कांत्रतासियन* की सहायता करती थी। इस परिषद का निर्माण 1503 में किया गया था। ये दो संस्थाएं नियुक्ति सहित औपनिवेशिक सरकार के वित्तीय संगठन और इसके हर पहलू को निर्देशित करती थीं। विधिक और व्यापार निकायों के रूप में काम करते हुए ये व्यापार और

जहाज परिवहन पर पूर्ण एकाधिकार के द्वारा स्पेन और नई दुनिया के बीच सभी निर्यातों और आयातों को नियंत्रित करती थीं।

स्पैनिश शासन में शहरी चरित्र के कुछ सामान्य लक्षण मौजूद थे। आरंभ के वर्षों में यह कई अवसरों पर अस्थायी प्रकृति का प्रतीत हुआ। प्राकृतिक आपदाओं के परिणामस्वरूप कुछ महत्वपूर्ण केंद्रों जैसे सेंटो डोमिंगों, ग्वाटेमाला सिटी का पुनर्निर्माण कराना पड़ा था। यह भी प्रकट होता है कि इसके प्रमुख प्रशासनिक केंद्र अलग-अलग बिखरे और एकांत में थे क्योंकि स्पैनिश शासन के अंतर्गत अत्यधिक ऊंचाई वाले स्थान, घने जंगल और विस्तृत भूभाग थे। शहरों के बीच दूरियां और कई अन्य बाधाओं के कारण संचार की समस्याएं थीं। केवल कुछ शहरों में बसी हुई आबादी के झुंड थे। कुल मिलाकर स्पेन का औपनिवेशिक साम्राज्य व्यापक रूप से बिखरी बस्तियां ही दरशाता है। इसमें अभिजात वर्ग के लोग शहरी केंद्रों में अवस्थित थे। नई दुनिया में विजय और राजनीतिक संगठनों के अलग-अलग पैटर्न देखे जा सकते थे। मैक्सिकन विजय और पेरूवियन विजय विरोधाभासी तरीके से किए गए थे। परिणामस्वरूप मैक्सिको में स्पेन के राजा का शासन प्रभावी रूप से स्थापित हो गया जबकि पेरू में शांति स्थापना और प्रशासनिक ढांचे का विकास विजय के काफी बाद हुआ। ठीक इसी प्रकार वेस्ट इंडीज के मामले में भी अलग-अलग पैटर्न्स देखे जा सकते हैं। स्पैनिश शासन और नियंत्रण की प्रकृति प्रत्येक क्षेत्र की आर्थिक क्षमता और भौगोलिक बनावट के अनुसार बदलती थी। (देखें मानचित्र 3.3)।

औपनिवेशिक साम्राज्यों का प्रभाव

पंद्रहवीं सदी के अंत में और सोलहवीं सदी के आरंभ के वर्षों में नाविकों और साहसिकों द्वारा विशाल क्षेत्रों की यूरोपीय खोज मानव इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी क्योंकि इसके परिणामस्वरूप नई दुनिया के कई भाग अंतिम रूप से उपनिवेश बना लिए गए। यूरोपीय सफलता की वजह थी समुद्री यात्रा संबंधी श्रेष्ठता और अग्नि-शस्त्रों का उनका ज्ञान। इससे दूरस्थ क्षेत्रों में यूरोप का प्रभाव और सत्ता स्थापित हो गई लेकिन स्वयं यूरोप पर भी शेष विश्व के साथ इसके संपर्क से काफी गहरा प्रभाव पड़ा।

नई दुनिया की खोज विषयक इतिहासलेखन में पिछली पांच शताब्दियों में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। इसका तत्काल प्रभाव उतना नाटकीय प्रतीत नहीं हुआ जितना आम तौर पर समझा जाता है। किसी भी महत्वपूर्ण हलके में कोलंबस की मृत्यु का उल्लेख शायद ही किया गया था। बाहरी दुनिया के बारे में जनसाधारण की समझ में कोई अचानक बदलाव नोट करना कठिन होगा। नए प्रदेशों का महत्व बड़ी मात्रा में बहुमूल्य धातुओं के आने और नए उत्पादों की धीरे-धीरे पहचान होने के साथ महसूस किया गया। कई इतिहासकार नए क्षेत्रों, खास तौर पर अमरीका की यूरोपीय खोज के लाभकारी प्रभाव पर

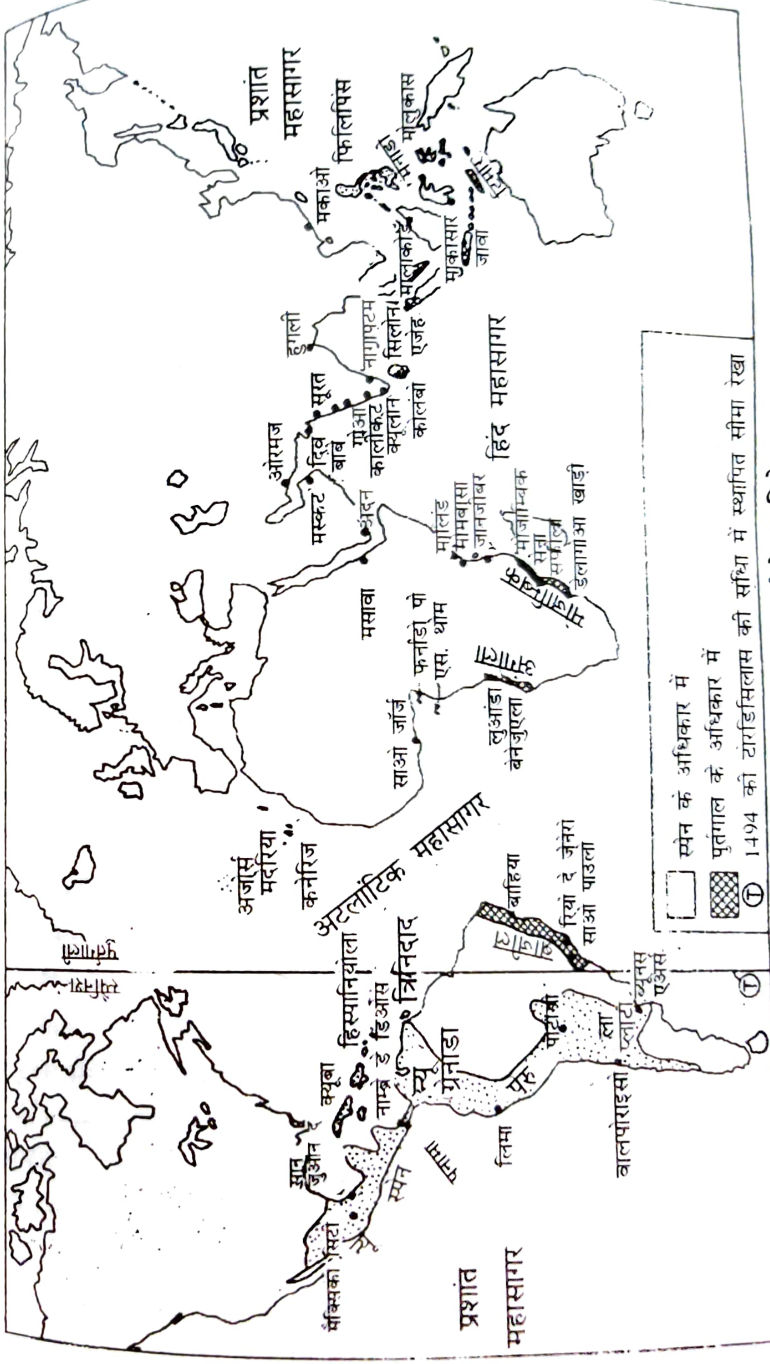

मानचित्र 3.3 : पश्चिमी गोलार्द्ध के उपनिवेश

जोर देते हैं। एक अमरीकी इतिहासकार वाल्टर प्रेस्काट वेब का मानना है कि कोलंबस की सफलता के परिणामस्वरूप यूरोप की निरंतर प्रगति हुई। इसने यूरोप के लिए 'नई महान सरहद' खोल दी। 1500 ई. में लगभग 100 मिलियन आबादी थी, जिनका लगभग 1,000 मिलियन हेक्टेयर भूमि पर कब्जा था और वे इनका दोहन कर रहे थे। नई दुनिया ने 5,000 मिलियन एकड़ जमीन अचानक और उपलब्ध करा दी। इससे यूरोपियों के लिए नए अवसर खुल गए। परिणामस्वरूप अगले चार सौ वर्षों में जबरदस्त तरक्की हुई। बहरहाल यह विचार यूरोप की आंतरिक गत्यात्मकता के तत्वों की अनदेखी करता है, जिसने यूरोपीय अर्थव्यवस्था के विकास में मदद की। पीयर शानु भी इस बात पर बल देते हैं कि नए भूभागों की खोज ने बहुत-से यूरोपीय उद्योगों का विकास किया। इमैनुएल वालरस्टीन और ऐंद्रे गुंडर और कई अन्य विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के उभरने में औपनिवेशिक व्यापार की भूमिका पर बल देते हैं। मार्क्स ने भी कहा था कि पूंजी का आधुनिक इतिहास वाणिज्य को अपनाने वाली दुनिया और सोलहवीं सदी में बाजार को गले लगाने वाली दुनिया के निर्माण के समय से शुरू होता है। यद्यपि बाद में हुई यूरोपीय प्रगति का श्रेय केवल औपनिवेशिक साम्राज्यों को ही नहीं दिया जा सकता लेकिन सामंती संरचना को कमजोर करने और पूंजीवादी विकास की प्रक्रिया में तेजी लाने में उनकी भूमिका से कोई इनकार नहीं कर सकता है। उपनिवेशों के अभ्युदय के कारण भूमध्यसागरीय अर्थव्यवस्था का पतन और उत्तर-पश्चिमी यूरोप में अटलांटिक तटीय क्षेत्र का उदय हुआ था।

अमरीकी खोज को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने वाले इतिहासकारों की दो प्रमुख शाखाएं हैं। पहली जिसे बार्डिक शाखा कहते हैं, इतिवृत्तात्मक लेखनों की उत्पाद थी। इस शाखा के इतिहासकारों ने क्रिस्टोफर कोलंबस जैसे यूरोपीय समुद्री यात्रियों की महान उपलब्धियों की प्रशंसा की। इस शाखा के इतिहासकारों में जॉर्ज ब्रेंकॉफ्ट, विलियम प्रेस्कॉट, फ्रैंसिस पार्कमैन और सैमुएल इलियट मॉरिसन, आल्फ्रेड डब्ल्यू. क्रॉस्बि जैसे प्रख्यात इतिहासकारों के नाम शामिल हैं (माइकेल एडास की *इसलामिक एंड यूरोपियन एक्सपैंशन* में 'कोलंबियन समुद्री यात्राएं, कोलंबियन विनमय और उनके इतिहासकार' की चर्चा की गई है, पृ. 141-64)। इनके लेखन मुख्य रूप से जीवनी की शैली में थे, जिसमें विजेताओं की बहुत प्रशंसा की गई थी। उन्होंने विजय के नकारात्मक पक्ष को अनदेखा किया। इनकी पुस्तकों में मैक्सिको और पेरू के स्थानीय लोगों का वर्णन 'वहशी' और 'बर्बर' जैसे कठोर शब्दों में किया गया। उन्होंने साहसिक विजेताओं की भूमिका की सराहना की। इतिहासकारों का दूसरा समूह 'बर्कले शाखा' कहलाता है। यह शाखा अज्ञात क्षेत्रों की खोज के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए अंतरअनुशासनिक दृष्टिकोण का अनुसरण करती है। इसमें अलग-अलग अनुशासनों के विद्वान जैसे भूगोलवेत्ता बार्ल ओ. साउर, शरीरविज्ञानी शेरबर्न एफ. कूक और एनल्स स्कूल के इतिहासकार और कुछ अन्य विद्वान जैसे जॉन एल. स्टीफेन, लीजले बी. सिंपसन, दू बोय और मेल्विले हस्कोविट्स

शामिल हैं। उन्होंने इस धारणा को खारिज कर दिया कि नए खोजे गए प्रदेशों की इंडियन सभ्यता के लोग वहशी और असभ्य हैं। यूरोपीय साम्राज्यवाद की जड़ें धर्मयुद्धों के भूमध्यसागरीय युग में बताई गईं, जहां सांगठनिक ढांचे और शोषण की तकनीकें विकसित की गईं और बाद में ये यूरोप के बाहर के प्रदेशों पर थोप दिए गए। यहां यूरोपियों ने चीनी का उत्पादन सीखा और इसके लाभकारी व्यापार का उपयोग किया। इन विद्वानों ने त्रिकोणीय व्यापार पर भी जोर दिया जो आईबेरियाई देशों, अटलांटिकपारीय प्रदेशों, एजोर्स और कैनरीज के बीच विकसित हुआ। पीयर शानु ने इसका 'भूमध्यसागरीय अटलांटिक' के रूप में वर्णन किया। दक्षिणी और पश्चिमी यूरोप के नाविकों ने अनुभव से समुद्री हवाओं के रुख के बारे में सीखा और इस प्रकार वे नौयात्रा कर एशिया और अमरीका पहुंचे। वे मेदीरा में गन्ने की खेती के कारण भूमि प्राप्त करने के इच्छुक हो गए और कनेरीज में वहां के मूल निवासियों, गाउंचेज का स्थान ले लिया। आयातित दास श्रमिकों से यूरोपीय बाजार के लिए उष्णकटिबंधीय फसल उगाए जाते थे। बाद में अमरीका और वेस्ट इंडीज के दूर-दराज के क्षेत्रों में ये तकनीक अपनाई गई।

नए प्रदेशों की खोज का यूरोपियों की जिंदगियों पर काफी महत्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव पड़ा। आईबेरियन राज्यों में औपनिवेशिक साम्राज्यों की स्थापना का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम आर्थिक संतुलन का भूमध्यसागरीय राज्यों से अटलांटिक देशों की ओर अंतरित होना था। यद्यपि मसाला व्यापार पर पुर्तगाली नियंत्रण से मिस्र और अरेबिया के माध्यम से होने वाला भूमध्यसागरीय व्यापार अचानक समाप्त नहीं हुआ, लेकिन इससे इसकी लाभदायकता निश्चित ही कम हो गई। एशियाई व्यापार पर इटली के सबसे प्रभुत्वशाली और आर्थिक दृष्टि से शक्तिशाली राज्यों की पकड़ समाप्त हो गई और ये धीरे-धीरे व्यापार में नियमित गिरावट महसूस करने लगे। वहीं, अटलांटिक तट पर कई बंदरगाह विकसित हो गए जिसने यूरोप के आर्थिक जीवन में अपेक्षाकृत बड़ी भूमिका अदा की। सोलहवीं सदी में कैडिज, सेविले, लिस्बन और एंटवर्प आरंभ में कुछ महत्वपूर्ण बंदरगाह थे। लिस्बन, जो अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण वाणिज्यिक बंदरगाह था, एक बार उपनिवेशों के स्थापित हो जाने के बाद यूरोप का तीसरा सबसे बड़ा शहर बन गया। इसकी आबादी 1,65,000 से भी अधिक हो गई।

लंबी दूरी के व्यापार सें यूरोप के नौपरिवहन उद्योग के विकास में सहायता मिली। इससे व्यापारी नाविकों को काफी प्रोत्साहन मिला। यूरोपियों ने अमरीका में अग्निशस्त्र और हथियार लाए। स्पेन ने सभी उपकरणों से लैस जहाजों के एक बड़े बेड़े के साथ इसमें नेतृत्व प्रदान किया जो समुद्रपारीय व्यापार संभालने में सक्षम था। संपूर्ण महत्वपूर्ण नौपरिवहन उद्योग अटलांटिक तट पर अवस्थित हो गया, यद्यपि इसका वास्तविक लाभ अपेक्षाकृत दो नए अटलांटिक राज्यों—हॉलैंड और इंगलैंड ने उठाया।

फसलों और बीमारियों का विनिमय

आल्फ्रेड डब्ल्यू. क्रास्बि जैसे इतिहासकारों ने अमरीका में यूरोपियों के आगमन के जैविक परिणामों की पड़ताल की है। वह मानते हैं कि इन महाद्वीपों के बीच पौधों और जानवरों का विनिमय लाभदायक था और इसके फलस्वरूप जीवविज्ञान का भूमंडलीकरण हुआ लेकिन इसके भयंकर और विनाशकारी परिणाम हुए जैसे बीमारियों का प्रसार। नए क्षेत्रों और अपार संसाधनों की खोज ने यूरोप और बाहरी दुनिया के बीच व्यापार की प्रकृति बदल दी। इसने यूरोपियों को नए कृषि उत्पादों से परिचय कराया जिनका आहार-मूल्य काफी अधिक था जैसे आलू, टमाटर, कोको (एजटेक्स इससे शीतल चॉकलेट पेय बनाते थे), तंबाकू (औषधीय गुणों के लिए जाना जाता था), मक्का, मूंगफली, वैनिला, रबर और मोठ। कल्पना की जा सकती है कि इन खाद्य पदार्थों ने यूरोपीय आबादी के आहार को किस प्रकार परिवर्तित किया होगा और बाद में दुनिया के अन्य क्षेत्रों के लोगों के आहार को जहां ये ले जाए गए और उपभोग किए गए। दो फसलों, मक्का और आलू ने बढ़ती हुई यूरोपीय आबादी की खाद्य समस्या का काफी हद तक समाधान कर दिया। कई पौधों के आने और यूरोपीय जलवायु में उनके अनुकूलन और प्रसार का महत्वपूर्ण पोषणात्मक प्रभाव हुआ। अनुकूलन की यह प्रक्रिया बहुत धीमी थी क्योंकि रुचि विकसित की जानी थी और भूमि की उपयुक्तता निर्धारित की जानी थी। इनमें से कई पौधे बड़े पैमाने पर घर के उद्यानों में खाद्य स्रोतों के रूप में उगाए जाते थे। स्पेन और पुर्तगाल से इसका प्रसार उत्तरी भागों में हुआ। एक ऐसी ही फसल मक्के की थी। इसने राई और ज्वार की जगह ले ली। सोलहवीं सदी के मध्य के बाद इसे इतालवी राज्यों में लगाया गया। वहां से यह पूर्वी यूरोप पहुंची। सोलहवीं सदी के दौरान शकरकंद स्पेन और पुर्तगाल के उद्यानों में एक लोकप्रिय फसल बन गया। यूरोप में इसे मुख्य फसल के रूप में लाया गया लेकिन आयरलैंड और पोलैंड में यह काफी लोकप्रिय हो गया, जहां इसकी व्यापक रूप से खेती की जाती थी। इसने उन समाजों की आहार प्रणाली काफी बदल दी। जिन क्षेत्रों में जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े थे, किसानों ने पाया कि खाद्यान्नों की तुलना में इन नए फसलों की प्रति हेक्टेयर पैदावार अधिक है। अठारहवीं सदी के दौरान जर्मनी में व्हाइट पोटैटो एक महत्वपूर्ण फसल बन गया। आरंभ में इसे गरीब ग्रामीण लोग खाते थे लेकिन धीरे-धीरे यह शाही रसोई तक पहुंच गया। सोलहवीं सदी में एक और अमरीकी खाद्य पदार्थ, टमाटर दक्षिणी यूरोप में लोकप्रिय हो गया। इसने भी यूरोपियों के खानपान को प्रभावित किया। फ्रांस में इसका स्वागत किया गया लेकिन इंगलैंड में पूरी तरह तिरस्कार कर दिया गया लेकिन भारत, इटली और उत्तरी अमरीका में इसे सहज रूप से स्वीकार किया गया। यही हाल रेड पैप्पर (लाल मिर्च) के साथ हुआ। इन दोनों उत्पादों का कैलोरी के हिसाब से कम महत्व है। इनमें विटामिनों की प्रचुर मात्रा थी और ये बेस्वाद भोजन को स्वादिष्ट बनाते थे। पुर्तगालियों ने भी अफ्रीका से

चीनी और एशिया से नरम और मोटे किस्म के कपड़ों से लेकर अनेक उत्पादों को यूरोप में पेश किया। यूरोप के उच्च वर्गों के लोगों में भारत के बेहतरीन किस्म के सूती कपड़ों के प्रति जबरदस्त आकर्षण बढ़ने लगा। पहली बार यूरोपियों ने सूती के अधोवस्त्रों और रूमालों का उपयोग करना शुरू किया।

अतः आरंभ के औपनिवेशिक साम्राज्यों ने दुनिया के एक भाग से दूसरे भाग तक दैनिक उपभोग की वस्तुओं के विनिमय को प्रोत्साहित किया। एशियाई अदरख, चावल और काली मिर्च नई दुनिया पहुंच गए, मक्का अफ्रीका पहुंच गया और कॉर्न, कुनैन और पीरू नई दुनिया से अन्य महादेशों में ले जाए गए। नए कृषि उत्पादों और बागानों के विकास ने यूरोप में खास तौर पर अटलांटिक तट पर कुछ प्रकार के उद्योगों को संवर्द्धित किया। लंबी समुद्री यात्राओं ने अच्छे आहार और भूमि के ताजे उत्पादों के भोजन के महत्व को उजागर किया क्योंकि समुद्री यात्राओं के परिणामस्वरूप नाविकों में स्कर्वी (विटामिन सी की कमी से हुई बीमारी) के अनेक मामले सामने आ रहे थे। कोलंबस पूर्व अमरीकी इंडियंस कुत्ते और ल्यामा को छोड़कर अन्य किसी पशु को नहीं पालते थे। स्पेनवासियों ने घोड़े, भेड़, गदहे, बकरा, सूअर, और वाटर बफैलो और पालतू मुर्गियां पालना शुरू किया। ये पशु-पक्षी अमरीकियों के लिए घास को दूध और मांस में तबदील करते थे। डी गामा की यात्रा तक विदेशी साम्राज्य से प्राप्त आय मुख्य रूप से अफ्रीकी सोना, दास और मालागुएटा (एक सस्ती किस्म की काली मिर्च) से आती थी। एशियाई मसाले जैसे काली मिर्च, अदरख, दालचीनी, लौंग, जायफल, जावित्री पुर्तगाल के शाही राजस्व के महत्वपूर्ण स्रोत बन गए। यह 1506 में कुल शाही आय का 27 प्रतिशत था जो 1518 तक बढ़कर 39 प्रतिशत हो गया (मैक एलिस्टर)। मसाला व्यापार का प्रमुख केंद्र एंटवर्प था जहां विदेशी इससे काफी लाभ कमाते थे। ऐसा माना जाता है कि 1520 के आसपास एशिया से 6,000 टन काली मिर्च पुर्तगाल भेजी गई। उत्पादों का विनिमय—अर्थात औद्योगिक उत्पादों के बदले नई दुनिया से कच्चे माल और खाद्य का विनिमय यूरोप के लिए काफी उपयोगी साबित हुआ। इसके परिणामस्वरूप दीर्घकाल में अन्य महाद्वीपों पर यूरोप का आधिपत्य हो गया।

जनसांख्यिकीय परिणाम

फर्नेंद ब्रोदेल, इरिक आर. वोल्फ, वालरस्टीन और विलियम मैक्नील ने विभिन्न बीमारियों के फैलने में जनसंख्या के आप्रवास के महत्व को उजागर किया है। इस विषय पर विशेषज्ञों में असहमति है कि 1492 के पहले अमरीका में कुछ बीमारियां मौजूद थीं या नहीं। यह तर्क दिया जाता है कि पीत ज्वर अफ्रीकी हो सकता है या अमरीकी बंदरों का स्थानिक रोग हो। कई अन्य बीमारियों के बारे में माना जाता है कि ये यूरोप से आई थीं जैसे चेचक, खसरा,

कुकरखांसी, छोटी माता (चेचक), ताऊन महामारी, मलेरिया, डिफ्थेरिया और इनफ्लुएंजा। एक इतिहासकार ने इसे 'बैक्टीरियाई युद्ध' कहा है। बहरहाल अमेरीइंडियंस का सबसे खतरनाक संहारक चेचक था। पुनर्जागरण से लेकर उन्नीसवीं सदी तक यह यूरोपीय महाद्वीप की सबसे व्यापक और भयावह बीमारी बनी रही। पहले पहल यह 1518 में वेस्ट इंडीज में देखी गई। वहां से कोर्ते के हमले के साथ यह मैक्सिको में फैली और फिर पूरे मध्य अमरीका को अपनी चपेट में ले लिया। माना जाता है कि चेचक से कम से कम एक चौथाई से एक तिहाई आबादी समाप्त हो गई। क्राम्बि के अनुसार 1519 और 1810 के बीच मैक्सिको घाटी में कोई 50 भयानक महामारियां फैलीं। इन बीमारियों का अमेरीइंडियन आबादी पर सैनिकों और हथियारों से कहीं अधिक घातक असर हुआ।

औपनिवेशिक साम्राज्यों के निर्माण के फलस्वरूप यूरोप से नई दुनिया में जनसंख्या का बड़े पैमाने पर आप्रवास हुआ। जैसा कि मैक एलिस्टर कहते हैं, 'खोज विजय में लीन हो गई और विजय औपनिवेशीकरण में घुलमिल गई।' जहां अफ्रीका और एशिया में आप्रवास की शायद ही कोई गुंजाइश थी क्योंकि यहां पहले से ही अच्छी-खासी आबादी थी, वहीं अमरीका के विस्तृत मैदानों और वेस्ट इंडीज ने इसके लिए बहुत अधिक अवसर प्रदान किए। अनगिनत पुर्तगाली ब्राजील जाकर बस गए जहां उन्होंने बड़े-बड़े खेतों में कृषि का विकास किया। स्पेनवासी बड़ी संख्या में नई दुनिया में जाकर बसे ताकि वे वहां की धन-संपदा का दोहन कर सकें। ये सब मुख्य रूप से व्यक्तिगत प्रयास और सम्राट की नीतियों के परिणाम थे। व्यक्ति विशेष के प्रवास के कई कारण थे जैसे—नए भूभागों में जाकर धन अर्जित करना, अपनी हैसियत बढ़ाना, कभी-कभी कड़े नियमों और दमनकारी प्रशासन से बचने के लिए, खुद को धार्मिक निरंकुशता से मुक्त करने के लिए, व्यापार से लाभ अर्जित करने के लिए आदि। कई ईसाई मिशन वहां स्थानीय लोगों को ईसाई धर्म में धर्मांतरित करने के लिए गईं। उपनिवेश निर्माण के आरंभ में राज्य ने भी भूमि अनुदान देकर या कर से छूट देकर आप्रवास को प्रोत्साहित किया। इसका उद्देश्य अपेक्षाकृत अधिक राजस्व प्राप्त करना और मानवशक्ति की कमी का सामना कर रहे कम पसंदीदा क्षेत्रों में आप्रवासियों को भेजना था। यह अनुमान लगाना कठिन है कि नई दुनिया में कितने आप्रवासी आए। लाइसेंसों के रजिस्टरों में अंकित आधिकारिक आंकड़ों के आधार पर 1509 और 1559 के बीच नई दुनिया में 15,480 लोग आए, हालांकि यह काफी कम प्रतीत होता है। अमरीका के लिए प्रस्थान करने वाले अनेक पोतों का सेविले में कासा में पंजीयन नहीं हुआ था, क्योंकि उनके पास नियमित लाइसेंस नहीं थे। इसके अलावा कुछ वर्षों के आंकड़े रजिस्टर से गायब हैं। परिणामस्वरूप इतिहासकार मानते हैं कि यह संख्या काफी अधिक थी। उदाहरण के लिए बायड बौमैन ने उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर यह अनुमान किया है कि 1493 और 1579 के बीच 45,374 लोग यूरोप से रवाना हुए। लेकिन वह स्वीकार करते हैं कि यह संख्या शायद आप्रवासियों की वास्तविक संख्या का पांचवां भाग

थी। इसलिए मैक एलिस्टर के अनुसार यह संख्या निश्चित ही लगभग 2,26,870 होगी। इनमें से 95 प्रतिशत लोग केवल कस्तील से थे और बाकी लोग अरागन, नवारे, एंदालुसिया से। इनके अलावा पुर्तगाली और इतालवी लोग थे। इतालवी राज्यों पर आर्गनीज शासन के कारण इतालवियों का स्पेन के साथ घनिष्ठ संबंध था। साथ ही, वे अच्छे नाविक थे और अपनी धन-संपदा के कारण सम्राट पर उनका काफी प्रभाव था। नए भूभागों में यूरोपियों के लिए विशाल अवसर थे। यह आप्रवास एकतरफा प्रतीत होता है क्योंकि हम यह नहीं सुनते कि स्थानीय अमरीकी पर्याप्त संख्या में यूरोप में आकर बसे। कुछ विद्वानों द्वारा यह तर्क दिया जाता है कि स्पेन जैसे देश उत्पादक आबादी और कोर्ते और कसादा जैसे लोगों से वंचित हो गए। फिर भी अफ्रीकियों और अमरीकियों का नुकसान अपेक्षाकृत अधिक था। स्पेन के विजेताओं और उनके सिपाहियों ने एजटेक और इंका जैसी समृद्ध और विशाल सभ्यताओं को तहस-नहस कर दिया। यह अनुमान लगाया जाता है कि यूरोपीय विजय के कारण लगभग 70 मिलियन लोग मारे गए। शेरबर्न एफ. कूक और वुड्रो बोराह के अनुसार मध्य मैक्सिको में 1520 में अमेरीइंडियंस की आबादी लगभग 25 मिलियन थी; 1532 तक यह घटकर 11.2 मिलियन हो गई। 1548 में यह 4.7 मिलियन, 1568 में 2.2 मिलियन और 1608 तक घटकर 8,52,000 ही रह गई। डेविड नोबल कूक के अनुसार पेरू में अमेरीइंडियंस की आबादी 1620 ई. तक 9 मिलियन से घटकर 5,98,026 रह गई थी। इसलिए कहा जाता है कि 'कोलंबस अमेरीइंडियंस के लिए सर्वनाश का अग्रिम एजेंट था।' अन्य तरीकों से इस कमी को पूरा करने के प्रयास किए गए जैसे अफ्रीकी दासों का आयात करके और स्थानीय महिलाओं के साथ यूरोपीय की शादी के जरिए। इनके जो बच्चे हुए *क्रियोल्स* कहलाए। नई दुनिया में स्पेन के शासन को बनाए रखने में इन लोगों ने अहम भूमिका अदा की। सत्रहवीं सदी तक अफ्रीकी दास उन सभी क्षेत्रों में ले जाए गए जहां यूरोपियों ने अपनी पैठ बना ली थी। यह देखना रोचक है कि अमरीकी स्वतंत्रता के समय कुल आबादी का 19% अश्वेत थे। जनसंख्या में आए इन परिवर्तनों ने पश्चिमी गोलार्द्ध की आबादी के जातीय स्वरूप को बदल दिया।

कला और साहित्य

आरंभ के वर्षों में हो सकता है शुरुआती औपनिवेशिक साम्राज्य का कला और संस्कृति पर व्यापक प्रभाव न हो लेकिन बाद के समय में कुछ अप्रत्यक्ष प्रभाव निश्चित रूप से दिखता है। स्पैनिश स्रोतों और समुद्री यात्रियों, मिशनरियों, समुद्री लुटेरों और व्यापारियों के माध्यम से नई दुनिया के बारे में जानकारी यूरोप तक पहुंचने लगी। इसमें न केवल सरकारों, शासकों और दरबार के अधिकारियों बल्कि मानचित्रकारों और शिक्षाविदों की भी रुचि जगी और यह अनेक लेखकों और कलाकारों के लिए प्रेरणा स्रोत बन गई। नई दुनिया के बारे में जानकारी का स्वांगीकरण बहुत धीरे-धीरे हुआ। जैसा कि यूरोपियों का शिक्षित वर्ग

अपनी ही गतिविधियों में व्यस्त था और मानववाद की ओर आकृष्ट था, इसलिए व्यापारी व्यापार के व्यापक विस्तार से खूब लाभ कमा रहे थे। इन नई खोजों के प्रति अकादमिक जगत में बहुत कम लोग उत्तेजित थे। नए भूभागों और अज्ञात सभ्यताओं की साहसिक यात्राओं ने कुछ लेखकों के विचारों को उत्तेजित किया। नाविकों और समुद्री यात्रियों ने मध्यकालीन जनश्रुतियों को बढ़ावा दिया क्योंकि उनमें से कई यह मानते थे कि दूर कहीं अज्ञात जगह पर एलडोरेडो, सिबोला के सात शहर और अनेक पौराणिक स्थान अवस्थित हैं। प्रख्यात अंगरेज कवि इडमंड स्पेंसर की श्रेष्ठ अपूर्ण कृति *दि फेयरी क्वीन* और विलियम शेक्सपियर की *दि टेंपेस्ट* महज फंतासी नहीं थी बल्कि इनमें कुछ सचाई भी थी। वे कहते थे कि पुरानी दुनिया के प्रतिबंध मानवीय क्षमता को सीमित करते हैं जबकि स्वतंत्र दुनिया में मनुष्य अपनी क्षमता को प्राप्त कर सकता है। स्वतंत्र दुनिया से उनका अभिप्राय नए खोज किए गए क्षेत्र से था। यहां तक कि थामस मोर का *यूटोपिया* भी बुद्धि द्वारा सृजित काल्पनिक गणराज्य के रूप में एक आदर्श राज्य का निर्माण था। मनुष्य नागरिक और धार्मिक स्वतंत्रता से वहीं रह सकता है जहां निजी संपत्ति की असमानताएं हों। कई कवियों और नाटककारों ने सुदूर समुद्रों में पड़े जहाज के भग्नावशेषों, समुद्री लूट, अमेरीइंडियन साम्राज्यों के पतन जैसे विषयों से प्रेरणा ली। फ्रैंसिस ड्रेक और हाकिंस जैसे लोगों ने सबसे साहसिक और सफल समुद्री डाकुओं के रूप में लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। पूरब की दुनिया के परिवेश और पात्रों को प्रस्तुत करने का पहला सजग प्रयास फर्नाओ मेंडास पिंटो द्वारा रचित *ट्रेवेल्स* (1614) में देखा जा सकता है। इटली के राम्युजियो और इंगलैंड के हकल्यूट ने अपने लेखनों में नई दुनिया के बारे में नई जानकारी दी। सोलहवीं सदी में मिशल व मांतेन जैसे फ्रांसीसी लेखकों ने दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में पाए गए विभिन्न मानवीय रिवाजों को अपनाने की वकालत की। उसी समझ के एक अन्य कवि पीयर डी रोंसार्द ने आग्रह किया कि ब्राजील के अमेरीइंडियंस को अपने ढंग से रहने दिया जाना चाहिए। यद्यपि अमरीका और एशिया की विदेशी विषयवस्तुओं का प्रभाव स्पेन के विजेताओं के महलों और कलाओं में देखा जा सकता है लेकिन यह प्रभाव उतना व्यापक नहीं था जितना व्यापक असर साहित्य के क्षेत्र में हुआ। कुछ असर एल्बर्ट एकनॉट (1607-65) और फ्रैंस पोस्ट (1612-80) जैसे डच चित्रकारों की कलाकृतियों में भी देखा जा सकता है। दुर्भाग्यवश समुद्र पार की दुनिया में संरक्षण की कम संभावना थी जो कि कलाकारों के लिए अहम होता है। अठारहवीं सदी में जाकर प्राच्य कला में वास्तव में विकास हुआ। बाहर की दुनिया से ली गई कल्पना द्वारा इन लेखनों ने आरंभिक आधुनिक यूरोप के साहित्य को काफी समृद्ध किया।

नए मार्गों और नए भूभागों की खोज का भूगोल और सृष्टि के ज्ञान पर भी काफी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। सदियों पुरानी मान्यताएं और सिद्धांत मेगेलन जैसे साहसी नाविकों द्वारा गलत साबित कर दिए गए। उनके द्वारा जलपथ से की गई विश्व की परिक्रमा ने पृथ्वी

के आकार के बारे में पुरानी मान्यताओं को ध्वस्त कर दिया। महासागर एक नहीं बल्कि दो और भी हैं जो हजारों मील चौड़े हैं और विशाल भूभागों को अलग करते हैं। इस खोज ने यूरोपियों के क्षितिज को व्यापक बना दिया। समुद्री यात्राओं से यह उजागर हुआ कि पृथ्वी की परिधि पुराने विद्वान जितनी चौड़ी मानते थे, उससे कहीं अधिक चौड़ी है। इसके परिणामस्वरूप समुद्र विज्ञान, मानचित्र विज्ञान और दिशाओं और दूरियों की समस्याओं के बारे में नए ज्ञान का विकास हुआ। अक्षांश और देशांतर के आधार पर पृथ्वी का अपेक्षाकृत अधिक सही परिमाप प्रस्तुत किया गया। जेरार्डस मर्केटर ने पृथ्वी की गोलाकार सतह को ज्यामितीय समतल पर सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया। हालांकि अंदरूनी भूमि के बारे में यूरोपियों को बहुत धीरे-धीरे जानकारी मिली। नए ज्ञान ने जैविक और प्राणीजगत संबंधी विज्ञान में बहुत बड़ा योगदान दिया। इसने यूरोपियों को अनेक पौधों और पशुओं की नई प्रजातियों से परिचय कराया। इन पौधों के बारे में पहली पुस्तक 1569 में आई जो स्पेनवासी निकोलस मोनार्डेस द्वारा लिखी गई थी। इसे बहुत लोगों द्वारा पढ़ा गया।

आर्थिक प्रभाव

इसमें कोई संदेह नहीं है कि यूरोप के आर्थिक जीवन पर औपनिवेशिक जगत का बहुत बड़ा प्रभाव था। यूरोपीय आप्रवासियों ने पूरे अटलांटिक क्षेत्र में जबरन अपने ढंग का सामाजिक और आर्थिक ढांचा विकसित किया जिसमें वे उत्पादन का संगठन करते थे। वे प्राथमिक उत्पादन, खनन या खेतों में काम करने के लिए वहां के मूल निवासियों और अफ्रीकियों को दास के रूप में इस्तेमाल करते थे। पूरब में स्थिति अलग थी। एशिया में वस्तुओं के उत्पादन और विपणन की सुविकसित आर्थिक और सामाजिक प्रणालियां पहले ही मौजूद थीं। यूरोपीय इन उत्पादों को पसंद करते थे। वे यहां व्यापारी के रूप में रहे न कि प्राथमिक उत्पादक के रूप में।

उत्पादन के संगठन और व्यापार से संबंधित नई दुनिया की दो तरह की अर्थव्यवस्थाएं थीं। इनमें से एक मुद्रा पर आधारित थी और यह यूरोपीय लाभ की ओर उन्मुख थी। इसके मुख्य निर्यात बहुमूल्य धातु, पशुचर्म, किरमिज और चीनी थे। निर्यात की कई और गौण वस्तुएं भी थीं जिनमें वन उत्पाद और कपड़ा रंगने की प्राकृतिक सामग्री शामिल थीं। इसके बदले में नई दुनिया के निवासी कपड़े, धातु सामग्री, शराब, जैतून का तेल प्राप्त करते थे। दूसरी अर्थव्यवस्था खदानों और कृषि पर आधारित व्यापारिक अर्थव्यवस्था थी। यह जकाटेकाज, मैक्सिको सिटी, पोटोसी, लीमा, पनामा और हवाना के किनारे केंद्रित थी। उत्पादन मुख्य रूप से बंधुआ मजूदर प्रणाली पर निर्भर था। इसमें अश्वेत गुलाम इंडियंस और मिश्रित प्रजाति के मजदूरों की खास तौर पर मैक्सिको के खानों में सहायता करते थे। इसे आदि-पूंजीवादी संरचना कहा जाता है। मैक एलिस्टर के अनुसार इसमें नई दुनिया आर्थिक दृष्टि से यूरोप पर निर्भर करती थी। नई दुनिया और पूरब के साम्राज्यों से यूरोपीय

अर्थव्यवस्था को अकूत संपत्ति मिली। अमरीका में स्पैनिश खनन कार्य और पुर्तगाली वाणिज्यिक उद्यमों के परिणामस्वरूप यहां की धन-संपदा का दोहन हुआ। इसके अलावा इंडियंस बंधक मजदूरों ने सोलहवीं सदी के दौरान यूरोपीय विकास के लंबे दौर में निश्चित तौर पर बहुत बड़ा योगदान दिया। यह यूरोपीय शक्तियों द्वारा सुदूर क्षेत्रों के औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया का संकेत था। इसके जरिए यूरोपियों ने औपनिवेशीकरण और साम्राज्यवाद के एक सुदीर्घ काल का आरंभ किया जो बीसवीं सदी तक चला।

कुछ कृषि उत्पादों के औपनिवेशिक स्वामित्व और बढ़ती मांगों के फलस्वरूप बागान कृषि अर्थव्यवस्था का निर्माण हुआ। यहां बड़े पैमाने पर नकदी फसलों की खेती की जाती थी क्योंकि यूरोप में इस पैमाने पर इन फसलों की खेती नहीं की जा सकती थी। इसके कई कारण थे जैसे उपयुक्त मिट्टी और जलवायु का नहीं होना और भूमि की अनुपलब्धता। औपनिवेशिक साम्राज्यों के निर्माण ने नए अधिग्रहित प्रदेशों में कृषि अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया। इस कृषि प्रणाली को पश्चिमी अफ्रीका के निकट अटलांटिक द्वीपों में खास तौर पर गन्ने की खेती में आजमाया गया जो कि लाभप्रद रहा। पूर्व के प्रयासों की सफलता के परिणामस्वरूप इसे उष्णकटिबंधीय अमरीका और कैरीबियाई द्वीपों में शुरू किया गया। इस प्रकार की खेती के लिए भारी पूंजी निवेश की आवश्यकता थी। डच ने ब्राजील के अपने अल्पकालीन कब्जे के दौरान कृषि फार्मों का विकास किया था। जब पुर्तगालियों ने उन्हें वहां से निकाल बाहर किया तो उन्होंने वेस्ट इंडीज में बागान कृषि संस्कृति की शुरुआत की। डच ने इंगलिश और फ्रेंच वेस्ट इंडीज को रम और शीरे बनाने की कला से परिचय कराया। यूरोपीय मूल के कुछ इने-गिने धनाढ्यों ने मुख्यभूमि के विशाल भूखंडों पर नियंत्रण शुरू कर दिया और दास श्रम के जरिए खूब धन कमाया। यूरोपीय स्थानीय श्रमिकों का शोषण करते थे। जब उनकी संख्या घटने लगी तो वे अफ्रीका से उनका आयात करने लगे। चीनी को अत्यधिक मूल्यवाली विलासिता की वस्तु से आम उपभोग की वस्तु बना दिया गया। यह अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य का एक हिस्सा बन गई। चूंकि इसके लिए बहुत बड़े पूंजी निवेश की आवश्यकता थी इसलिए नई दुनिया का चीनी उद्योग यूरोप के मुद्रा बाजार से जुड़ गया। इसका अंतिम लाभ एम्स्टर्डम और लंदन के बैंकिंग परिवारों को मिला। इसने अटलांटिक यूरोप के तटीय क्षेत्र को भी प्रभावित किया। इस क्षेत्र में खास तौर पर इंगलैंड और फ्रांस के अटलांटिक तट पर बड़ी संख्या में चीनी रिफाइनरीज खुल गईं। यूरोपीय आप्रवासियों के बीच तंबाकू की खेती भी लोकप्रिय हो गई। नई दुनिया की कोई भी देसी फसल तंबाकू की सफलता का मुकाबला नहीं कर सकती थी। यह स्पेन और पुर्तगाल के उपनिवेशों में उगाई जाती थी। शीघ्र ही इसकी खेती पश्चिमी भारत में भी शुरू की गई। स्पैनिश अमरीका से इसे वर्जिनिया और ब्रिटिश शासित उत्तरी अमरीका के मैरीलैंड में ले जाया गया। इसने यॉर्कशायर और ग्लासगो के तंबाकू उद्योग को बहुत बड़ा योगदान दिया। तंबाकू का यूरोपीय शक्तियों के खजानों में बहुमूल्य योगदान था। वेस्टइंडीज और बाद में

उत्तरी अमरीका में कपास की खेती भी अफ्रीका से लाए गए दास श्रमिक पर निर्भर थी। बाद में इससे यूरोपीय राष्ट्रों के कपड़ा उद्योग को सहायता मिली। दास श्रमिक का शोषण करने वाले यूरोपीय आप्रवासियों के लिए चीनी, कपास और तंबाकू की खेती लाभ का एक सस्ता स्रोत बन गई। कृषि अर्थव्यवस्था के विस्तार से व्यापार की वस्तु का प्रारूप भी बदल दिया। कम वजन और अधिक मूल्य वाली वस्तुओं का स्थान बड़े पैमाने पर खपत वाली वस्तुओं ने ले लिया।

औपनिवेशिक साम्राज्य का सबसे दूरगामी प्रभाव नई दुनिया से चांदी के आयातों से संबंधित था। साम्राज्य निर्माण की पूरी प्रक्रिया चांदी और सोने के स्रोतों के नियंत्रण के उद्देश्य से शुरू हुई थी और स्पेनवासियों ने इसमें बहुत बड़ी सफलता भी हासिल की थी। स्पेनवासियों ने सर्वप्रथम चांदी की खानों की खोज 1545 में की, जब आधुनिक बोलिविया में सैन लुई पोटोसी में चांदी के 2000 फीट ऊंचे पहाड़ का पता चला। इसके बाद मैक्सिकन पर्वत श्रृंखला में क्रमिक रूप से चांदी के खानों की खोज हुई। 1546 में जकोटकोज में, 1548 में गुआंजुआतों में, 1549 में टैसको में, 1551 में पांचुका में, 1555 में सोंब्रिरेटी और दरांगों में और 1569 में फ्रेस्निलो में चांदी की खानों का पता चला। पोटोसी स्थित प्रसिद्ध चांदी की खानों के खुलने का न केवल स्पेन बल्कि यूरोप के अन्य राज्यों की किस्मत पर बहुत अधिक असर पड़ा। यह अनुमान लगाया जाता है कि 1500 और 1650 के बीच आधिकारिक माध्यमों से 181 टन सोना और 16,000 टन चांदी यूरोप पहुंचा। यह भी माना जाता है कि सोने और चांदी की इससे भी कहीं अधिक मात्रा तस्करी के जरिए यूरोप पहुंची। इससे कई इतिहासकार मानते हैं कि सोलहवीं सदी के दौरान यूरोप में मूल्य क्रांति अमरीका से चांदी के आप्रवाह के कारण हुई। मूल्य क्रांति के परिणाम की चर्चा अन्य अध्याय में की गई है लेकिन बढ़ते मूल्यों से निश्चित ही बड़ी सामाजिक अव्यवस्था फैली होगी। व्यापार की विशाल मात्रा का भी यूरोप की वाणिज्यिक संस्थाओं पर प्रभाव पड़ा। इन संस्थाओं का काफी विकास हुआ। विभिन्न महाद्वीपों में फैले व्यापार की मात्रा के विस्तार का मूल्य क्रांति से गहरा संबंध था। इसके लिए संगठन और प्रबंधन की एक व्यापक व्यवस्था की आवश्यकता थी। लेन-देन को संचालित करने और व्यापार संबंधी गतिविधियों को विनियमित करने के लिए खास उपकरणों की बेहतर तकनीक, बीमा, बैंकिंग और कई अन्य वाणिज्यिक संस्थाओं की आवश्यकता थी। नतीजतन सोलहवीं सदी के उत्तरार्द्ध तक यूरोप में वाणिज्यिक क्रांति आरंभ हो गई। यद्यपि मूल्य क्रांति और वाणिज्यिक क्रांति का पूरा श्रेय औपनिवेशिक साम्राज्य को नहीं दिया जा सकता, फिर भी यूरोपीय अर्थव्यवस्था के विकास में इसके योगदान को कम नहीं आंका जा सकता है।

यूरोपीयों द्वारा संवर्द्धित सबसे कुख्यात व्यापार अफ्रीकी दासों का था जिसका परिणाम विनाशकारी हुआ। अर्स बिटर्ली के शब्दों में, 'अटलांटिक दास व्यापार संपूर्ण इतिहास में मानव जाति द्वारा अपने साथी मनुष्यों के दमन के लिए आरंभ की गई सबसे विकट और क्रूर

परियोजनाओं में से एक है।' एक संस्था के रूप में दास प्रथा सदियों से दुनिया के लगभग सभी हिस्से में मौजूद थी। 13वीं शताब्दी से 16वीं शताब्दी के मध्य तक जेनोआ के व्यापारी अकसर स्कैंडिनेविया से बंदियों को खरीदते थे। क्रीमिया के निकट एक दास बाजार विकसित हो गया था। पंद्रहवीं सदी के मध्य से पुर्तगाली और स्पैनिश व्यापार के उदय होने के साथ ही जेनोआ और वेनिस के दास व्यापारियों का महत्व घट गया। समुद्री यात्राओं के आरंभ में भूमध्यसागरीय क्षेत्र में चीनी के उत्पादन में पुरुष दासों का और घरेलू कामकाज में महिला दासों का उपयोग किया जाता था लेकिन दास प्रथा का नया पहलू भारी लाभ कमाने के इरादे से एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में तेजी से बढ़ता मानव व्यापार था। कई अवसरों पर एक स्थान के दासों का विनिमय दूसरे क्षेत्रों की वस्तुओं से किया जाने लगा। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों देश जैसे पुर्तगाल, हॉलैंड, फ्रांस और इंगलैंड इस व्यापार में खूब शामिल थे। *इनकोमिएंदा* प्रथा के जरिए स्पैनियार्ड्स ने स्थानीय इंडियंस को करीब-करीब दासों में तबदील कर दिया था। धीरे-धीरे अफ्रीकी दासों ने अमेरीइंडियंस का स्थान ले लिया और जमैका दास व्यापार का प्रमुख केंद्र बन गया। पुर्तगालियों ने अफ्रीकी दास प्रथा को यूरोपीय मांगों से गहरे रूप से जोड़ दिया। वे अफ्रीकी तटों से दास प्राप्त करके न केवल यूरोपीय बाजारों बल्कि ब्राजील, स्पैनिश अमरीका और कैरीबियाई द्वीपों में आपूर्ति करने लगे। ब्राजील के मूल निवासी कृषि श्रम के लिए अनुपयुक्त थे और वे बीमारियों द्वारा विनष्ट हो गए। इसलिए दुनिया के जिस हिस्से में भी बागानी कृषि अर्थव्यवस्था विकसित हुई थी वहां अफ्रीकी दासों की बहुत अधिक मांग थी। यूरोपियों द्वारा इनकी समुद्री लूट से यह स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में लाभ की गुंजाइश बहुत अधिक थी। 1600 ई. के बाद स्पैनिश अमरीका लगभग 3,000 दास प्रति वर्ष और ब्राजील लगभग 5,000 दास प्रति वर्ष प्राप्त करता था। एशिया में भी डच लोगों ने सुमात्रा में सोने की खानों में काम कराने और अंबोइना में जायफल की खेती के लिए दासों का इस्तेमाल शुरू कर दिया। अनेक चीनवासियों को भी वहां दास के रूप में लाया गया। डच और पुर्तगालियों ने श्रीलंका और अन्य यूरोपीय उपनिवेशों में काम किया और कुछ भारतीयों को दास बनाया। डच और पुर्तगाली आपूर्तिकर्त्ता नई दुनिया की अश्वेत दासों की मांगों को पूरा करते थे। पुर्तगाली उद्यमियों द्वारा अनेक अफ्रीकी दास खरीदे जाते थे और उन्हें पुन: जहाज द्वारा अन्यत्र भेजने के लिए स्पेन लाया जाता था। 1520 के दशक से दास सीधे नई दुनिया भेजे जाने लगे थे। ठेकेदारों के एक समूह ने दासों की आपूर्ति पर अपना एकाधिकार जमा लिया और ये *आशियेंतो* कहलाए। कुछ समय तक ये ठेकेदार दास व्यापार में सक्रिय रहे। बाद में इस व्यापार में डच के आने से पुर्तगालियों का एकाधिकार टूट गया। नई दुनिया में औपनिवेशिक साम्राज्य की स्थापना के परिणामस्वरूप दास व्यापार में बहुत तेजी से विकास हुआ और अफ्रीका, यूरोप और नई दुनिया को जोड़ने वाला त्रिकोणीय व्यापार उभरा। यह व्यापार का सबसे अमानवीय रूप था क्योंकि यूरोपीय पोत अफ्रीकी तट से दासों को ढोकर ले जाते। इस व्यापार में मानवीय तत्व

का कोई सम्मान नहीं था। यूरोपीय बागान मालिकों, सोने और चांदी के खदान मालिकों और नई दुनिया के शहरों की मांगों पर अफ्रीकी दासों की बहुत बड़ी-बड़ी खेप भेजी जाती थी। सोलहवीं सदी में लगभग 9 लाख, सत्रहवीं सदी में 37.5 लाख और अठारहवीं सदी में 70 और 80 लाख के बीच दास अफ्रीका से भेजे गए। इसका प्रभाव पूरे अफ्रीकी महाद्वीप पर पड़ा। इसने अंदरूनी भाग और बंदरगाहों के बीच दोहरी भूमिका अदा की। एक ओर इस व्यापार ने मोनोमोफ्फा और कांगो जैसे अंदर के राज्यों की शक्ति को कमजोर और नष्ट किया वहीं दूसरी ओर इससे यूरोपीय व्यापारियों को दासों और व्यापार के उत्पादों की आपूर्ति करने वाले तटीय प्रदेश के किनारे अनेक छोटे और कमजोर राज्यों के उभरने में प्रोत्साहन मिला। इससे अफ्रीका के औपनिवेशीकरण का मार्ग खुल गया। पूरब में मोजांबिक और पश्चिमी क्षेत्र में गिनी की खाड़ी और अंगोला के जरिए पहले पहल पुर्तगालियों ने अफ्रीकी व्यापार में प्रवेश किया। इसके बाद अन्य यूरोपीय राज्य यहां आए।

स्पेन पर प्रभाव

ऐसा प्रतीत होता है कि स्पेन पर औपनिवेशिक साम्राज्य का प्रभाव नकारात्मक और सकारात्मक दोनों हुआ। उपनिवेशों के स्वामित्व से निश्चित तौर पर स्पेन के सम्राट की यूरोप में शक्ति और प्रतिष्ठा, दोनों बढ़ीं। भौतिक और प्रशासनिक संसाधनों में व्यापक विस्तार हुआ। नई दुनिया में इसे व्यापक संरक्षण भी मिला। स्पैनिश साम्राज्य ने एक विशाल नौकरशाही का निर्माण किया जिसमें काउंसिल ऑफ दि इंडीज, *कासा दा कांत्रतासियन*, न्यायिक बेड़ा और अन्य विषय शामिल थे। इसने सम्राट का कद काफी ऊंचा कर दिया। दरअसल आने वाले दिनों में नौकरशाही असहनीय और बोझ बन गई। इसके अलावा सम्राट ने गिरजा संबंधी संरक्षण प्राप्त कर लिया। चार्ल्स ने धर्मशुल्क एकत्र करने का अधिकार अपने पास रखा था। उसने नए धर्माध्यक्ष के पदों सृजन किया था। नई दुनिया की ईसाई आबादी की निष्ठा स्पैनिश सम्राट में थी। वहां ईसाई प्रजा की जिंदगियों को विनियमित करने के लिए 22 बिशप क्षेत्र और आर्क बिशप क्षेत्र स्थापित किए गए थे।

स्पेन और पुर्तगाल की औपनिवेशिक नीतियां व्यापार मार्गों की सख्त निगरानी और एकाधिकारों के निर्माण पर आधारित थीं ताकि व्यापार राज्य की देखरेख में हो। वहीं बहुमूल्य धातु की भूमिका ने वाणिज्यवाद के विचारों को जन्म दिया। जैसा कि जे.ए. पैरी कहते हैं कि व्यापार पहली बार राष्ट्रीय सरोकार का मामला 'एक ही प्रयोजन के लिए बढ़ती तल्लीनता का विषय बना'। प्रत्येक राज्य ने आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने का प्रयास किया। उन्होंने चार्टर और विशेषाधिकार देने, एकाधिकार और संरक्षण प्रदान करने, विदेश व्यापार पर नियंत्रण करने, नौसेना को प्रोत्साहन देने, और व्यापार विनियमन के द्वारा बहुमूल्य धातुओं के संचय पर सबसे अधिक ध्यान देने की नीतियां अपनाईं। ये सभी पहलू वाणिज्यवाद के प्रमुख सिद्धांत बन गए। रिचर्ड हैक्ल्यूट ने कहा कि स्पेन को अपनी उपद्रवी

आबादी को नए भूभागों में भेजने से लाभ हुआ। उसने अंगरेज शासक से भी इसी नीति का अनुसरण करने का आग्रह किया। खजानों के पहुंचने का स्पेन पर लाभकारी प्रभाव हुआ, क्योंकि सेविले यूरोप का सबसे प्रमुख बंदरगाहों में से एक बनकर उभरा। औपनिवेशिक व्यापार से उत्तरी स्पेन में पोत निर्माण की गतिविधियों में तेजी आई क्योंकि व्यापारिक पोतों की मांग बढ़ रही थी। हालांकि यह गुलाबी तसवीर बहुत कम समय तक ही रही। दीर्घकाल में स्पैनिश उपनिवेश पर अमरीकी साम्राज्य का प्रभाव लाभकारी नहीं था। स्पेन के पतन को अकसर उसके औपनिवेशिक स्वामित्व से जोड़ा जाता है। यह कई उदाहरणों के जरिए समझा जा सकता है। यह संसाधनों का घोर दुरुपयोग और गलत धारणा थी कि सराफ़ा का अपरिहार्य रूप से अर्थ धन और संपन्नता है।

औपनिवेशिक साम्राज्यों के निर्माण के समय स्पेन का आर्थिक विकास मंद रहा था। आर्थिक आधार कमजोर था क्योंकि कृषि का विकास नहीं हुआ था। इसका कारण आंशिक रूप से बहुत अधिक अनुर्वर भूमि का होना और आंशिक रूप से भेड़ पालने वाले किसानों को राज्य द्वारा महत्व दिया जाना था। औद्योगिक आधार कमजोर था इसलिए स्पेन नई दुनिया से प्राप्त धन-संपदा का उपयोग नहीं कर सका, यद्यपि पोत निर्माण जैसे उद्योगों को लाभ हुआ। जब यूरोपीय आबादी के बड़े पैमाने पर आप्रवास से यूरोपीय वस्तुओं के लिए अमरीकी मांग बढ़ी, यह अपने बूते इस स्थिति का लाभ उठाने में सक्षम नहीं था। अपने तमाम पुरुषों, एंदालुसिया की शराब और तेल जैसी सामग्रियों, औद्योगिक शहरों के कपड़े लगा देने के बाद भी स्पेन इस कार्य में असफल सिद्ध हुआ। शेष यूरोप ने इस अवसर का लाभ उठाया और स्पैनिश उपनिवेशों का दोहन स्पेन के बजाए अन्य राज्यों के व्यापारियों के द्वारा किया गया।

स्पेन के अपने उपनिवेशों के साथ संबंध का सबसे नुकसानदेह पहलू यह था कि इसका पूरा ध्यान सोने-चांदी के दोहन पर केंद्रित था। इसने व्यापार के मदों के विविधीकरण पर शायद ही कोई ध्यान दिया। अपने उपनिवेशों में भोजन और विनिर्मित जिंसों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए यह अन्य देशों, खास तौर पर इंगलैंड, फ्रांस और फ्लैंडर्स से नौभार (कार्गो) का इंतजाम करने के लिए मजबूर था। स्पैनिश उपनिवेशों को बहुमूल्य धातुओं के खनन में विशिष्ट बनाया गया था। 1594 में अमरीका से यूरोप आए स्पैनिश मालवाहक जहाज में मुख्य रूप से बहुमूल्य धातु ही थे। कुल नौभार का 95.62 प्रतिशत खजाना, 2.82 प्रतिशत किरमिज, 1.16 प्रतिशत खाल, 0.29 प्रतिशत नील और शेष अन्य वस्तुएं थीं। 1609 में भी कुल नौभार का 84 प्रतिशत खजाना ही था। जैसा कि स्कैमेल कहते हैं कि इंडीज के चांदी की खानों वाले भूभाग स्पेन के अमरीकी साम्राज्य का हृदय बन गए और मैक्सिको और पेरू की सरकारें शासक घराने की मुख्य चिंता बन गईं। स्थानीय लोगों के अत्यधिक शोषण के परिणामस्वरूप वे करीब-करीब विलुप्त हो गए और बाद में अफ्रीका से अश्वेतों को खरीदना पड़ा। 1500 और 1660 के बीच दो प्रमुख खदानों—

जकाटेकोज और पोटोसी से आधिकारिक तौर पर लगभग 25,000 टन चांदी का यूरोप निर्यात किया गया जबकि वार्षिक अवैध निर्यात कोई 350 टन प्रति वर्ष था। उत्पादन बढ़ाने के लिए खनन प्रक्रिया में शीशा का स्थान पारा ने ले लिया। एंडीयन खनन में ही करीब 13,000 मजदूर लगे थे। स्पेन की कीमत पर अनेक देशों ने लाभ कमाया। इन देशों ने अपने उद्योगों में विनिर्मित वस्तुओं की आपूर्ति करके काफी बड़ी मात्रा में चांदी प्राप्त किए। हॉलैंड, फ्रांस और इंगलैंड से कई दस्तंदाज व्यापारी इस क्षेत्र में प्रवेश कर गए और स्पैनिश हितों को क्षति पहुंचाया। फ्रांसीसी गैर सरकारी युद्ध पोतों की गतिविधियों ने स्पेन के अटलांटिकपारीय व्यापार को बहुत नुकसान पहुंचाया। बहुमूल्य धातुओं की बड़ी मात्रा में खनन, आयात और पुनर्निर्यात स्पेन करता था लेकिन इसका लाभ पश्चिमोत्तर यूरोपीय राज्यों को होता था।

अधिकांश इतिहासकार इस समुन्नत व्यापार के लाभों को गंवाने के लिए स्पेन के सम्राट को दोषी मानते हैं। स्पेन के शासक चार्ल्स प्रथम (1516-1566) और फिलिप द्वितीय (1556-1598) ने स्पेन को अनेक युद्धों में शामिल करके साहसिक विदेश नीति में लग गए। हैब्सबर्ग-वेलुआ युद्ध, लूथर के धर्मसुधार आंदोलन के खिलाफ़ कार्रवाई, इंगलैंड, नीदरलैंड (स्वतंत्रता की लड़ाई जो अनेक दशकों तक चली) और तुर्कों के विरुद्ध युद्ध से न केवल स्पेन का राजस्व बल्कि औपनिवेशिक साम्राज्य के लाभ भी नष्ट हुए। जे.एच. इलियट का तर्क है कि चार्ल्स का साम्राज्यवाद घाटे के वित्तपोषण के द्वारा संभव हो सका और यह अमरीकी चांदी का चारा था जिसने इतने वर्षों तक और इतने बड़े पैमाने पर स्पेन के शासक को धन मुहैया कराने के लिए बड़े वित्तीय घरानों को प्रलोभन दिया। इस प्रकार से नई दुनिया ने सोलहवीं सदी के यूरोप के सर्वप्रथम महान साम्राज्यिक उद्यम को जारी रखने में मदद की। स्पेन के शासकों ने सराफ़ा से होने वाले आय का अधिक आकलन कर लिया था। सचाई यह थी कि बहुमूल्य धातु से प्राप्त आय कुल शाही आय का केवल 11 प्रतिशत थी (जॉन लिंच)। यह बहुमूल्य धातुओं के उत्पादन की प्रतिशतता पर आधारित थी। आरंभ में यह पांचवां भाग और बाद में यह घटकर दसवां भाग रह गया। इस आय के शाही हिस्से का उपयोग विदेशी बैंकों को उनके द्वारा सम्राट को दिए गए ऋण के प्रति किया जाता था। अतः विदेशी इस प्रकार के ऋणों पर भारी ब्याज कमाते थे। इसके अलावा सराफ़ा से प्राप्त आय के एक बड़े हिस्से को उन विदेशी वस्तुओं की खरीद पर खर्च किया जाता था जो नई दुनिया ले जाई जाती थीं। नीदरलैंड में स्पैनिश सेना, जो उपद्रव को शांत करने के लिए भेजी गई थी, भी अमरीकी खजाने का एक बड़ा हिस्सा उड़ा जाती थी। अतः वास्तव में स्पेन सराफ़ा की अधिकता नहीं बल्कि इसकी भारी कमी महसूस करता था। चूंकि चांदी की आपूर्ति में कमी आने लगी थी, इसलिए स्पेन के शासकों को अनेक बार अपनी मुद्रा का अवमूल्यन भी करना पड़ा। शाही राजस्व में गिरावट के परिणामस्वरूप वैकल्पिक आय की तलाश की जाने लगी। बढ़ाए गए करों ने कृषकों, विनिर्माताओं और व्यवसायियों को

प्रभवित किया। इलियेट जैसे इतिहासकरों ने स्पेन के पतन की परिघटना को अटलांटिक जगत के वृहत्तर संदर्भ में प्रस्तुत किया है। 1621 और 1641 के बीच स्पैनिश अटलांटिक साम्राज्य का पतन आरंभ हो गया था। आंशिक रूप से यह इंडीज से चांदी से प्राप्त आय में कमी और अंतरराष्ट्रीय संघर्षों के कारण हुआ जिनमें स्पेन शामिल था। 1620 और 1630 के दशकों की यूरोपीय लड़ाइयों में नई दुनिया को अधिक से अधिक घसीटा जा रहा था। यूरोप के शक्ति संघर्ष ने अटलांटिकपारीय चरित्र धारण कर लिया। अत: समयुगीन यूरोपियों के लिए स्पैनिश साम्राज्य की महत्ता प्रभावशाली हो सकती है लेकिन यह एक कमजोर अर्थव्यवस्था पर आधारित थी।

स्पेन के एक महान साम्राज्य के रूप में उभरने के फलस्वरूप इसकी सफलता की समकालीन लोगों में प्रशंसा की जाने लगी और यह अनुकरणीय आदर्श बन गया। हालांकि नव अधिग्रहित भूभागों में यूरोपियों खास तौर पर स्पेनवासियों द्वारा किए गए अत्याचारों ने कुछ यूरोपियों के मन में आक्रोश भी पैदा कर दिया। स्पेन के विधिवेत्ताओं ने मूल अमरीकियों की वैधानिक स्थिति पर बौद्धिक बहस छेड़ दी। विलियम पेन्न ने सुझाव दिया कि इंडियंस से व्यवहार करने में धार्मिक सहिष्णुता के क्वेकर के सिद्धांत का अनुसरण किया जाना चाहिए। लास कासास पहले व्यक्ति थे जिन्होंने उस काल में विजित गैर पश्चिमी लोगों के अधिकारों का सवाल उठाया। स्पेन के अधिकारियों और निजी व्यक्तियों का अत्याचार यूरोपीय विजय की एक भयावह तसवीर पेश करता था। आरंभिक प्रशंसा की जगह गंभीर आलोचना ने ले ली। लास कासास की *ब्रीफ अकाउंट ऑफ दि डिस्ट्रक्शन ऑफ द इंडीज* (1552) और गिरालानो बेंजोनी की *हिस्टरी ऑफ दि न्यू वर्ल्ड* (1565) में स्पेन की सत्ता का नकारात्मक प्रचार प्रस्तुत किया गया। कासास के प्रभाव में ही स्पेन के राजतंत्र ने अमेरीइंडियंस की दासता को समाप्त कर दिया, यद्यपि यह इसे लागू नहीं कर सका। अपनी पुस्तक *अपोलोजी* (1581) में विलियम ऑफ ऑरेंज ने 20 मिलियन इंडियंस के विनाश की जीवंत तसवीर स्पेनवासियों के अकल्पनीय क्रूरता के कार्य करने के साक्ष्य के रूप में पेश की। यहां तक कि कैटलेंस ने भी कस्तील के विरुद्ध पैंफलेट अभियान चलाया जिसमें इंडियंस के उत्पीड़नों को प्रस्तुत किया गया था। लास कासास का प्रमुख योगदान वैधानिक नहीं, विचारधारात्मक था। उनकी पुस्तक मानवाधिकारों पर पहली कोई बड़ी रचना थी। उन्होंने 'उदात्त वहशी' की अवधारणा प्रस्तुत की। शायद फ्रांस और इंगलैंड में इस अवधारणा ने ध्यान आकर्षित किया क्योंकि इसमें नई दुनिया के निवासियों को निर्दोष लोगों के रूप में प्रस्तुत किया गया जिन्हें यूरोपियों ने भ्रष्ट बना दिया था। कुछ विचारक और लेखक कोलंबस पूर्व सभ्यताओं से प्रेरणा लेने लगे। उनके समाज को यूरोप के विलासितापूर्ण और कृत्रिम समाज के विपरीत प्राकृतिक और शुद्ध माना गया था। इसी पृष्ठभूमि में थामस हाब्स ने अपनी पुस्तक *लेवियाथन* में सामाजिक ठेका के पहले के सहज समाज की तसवीर प्रस्तुत की।

अॅल्फ्रेड डब्ल्यू. क्राश्बि, *इकोलोजिकल इंपेरियलिज्म : दि बायोलॉजिकल एक्सपैंसन ऑफ यूरोप, 900–1900*, कैंब्रिज, 1986. सांस्कृतिक विनियम, जनसंख्या के आप्रवास संबंधी मानचित्रों और उदाहरणों के लिए अध्ययन के लिए अच्छी पुस्तक है.

रॉफ डेविस, *राइज ऑफ अटलांटिक एकानॉमिज*, इथाका, वीडेनफील्ड और निकोल्सन, 1973. यह न केवल अटलांटिक क्षेत्र में औपनिवेशिक गतिविधियों बल्कि यूरोप की क्षेत्रीय अर्थव्यवस्थाओं की विश्लेषणात्मक प्रस्तुति है.

जे.एच. इलियेट, *दि ओल्ड वर्ल्ड एंड द न्यू, 1492–1650*, कैंब्रिज, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1970. स्पेन और इसके उपनिवेशों के बीच संबंध का संक्षिप्त लेकिन सुंदर प्रस्तुतीकरण है.

लाइल एन मैकूएलिस्टर, *स्पेन एंड पुर्तगाल इन दि न्यू वर्ल्ड, 1492–1700*, ऑक्सफोर्ड, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1984. आरंभिक औपनिवेशिक साम्राज्यों के उदय, प्रकृति और परिणामों का विशद विश्लेषण प्रस्तुत करती है.

के.एस. मैथ्यू, *पोर्तुगीज ट्रेड विद इंडिया इन दि सिक्सटींथ सेंचुरी*, नई दिल्ली, मनोहर, 1983. पुर्तगाली साम्राज्य का भारतीय परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करती है.

जे.एच. पैरी, *दि एज ऑफ रिकॉनैसेंस*, लंदन, 1963. यह पुस्तक यूरोपीय नौचालन और आरंभिक चरण में विस्तार का उत्कृष्ट पर्यवेक्षण प्रस्तुत करती है.

————, *दि स्पैनिश सीबॉर्न एंपायर*, लंदन, 1966. यह स्पेन की औपनिवेशिक गतिविधियों और उनके साम्राज्य की संरचना का अच्छा आख्यान प्रस्तुत करती है.

विलियम डी. फिलिप्स और कार्ला रॉन फिलिप्स, *दि वर्ल्ड्स ऑफ क्रिस्टोफर कोलंबस*, कैंब्रिज, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1992. यह कोलंबस की समुद्री यात्राओं, विजयों, औपनिवेशीकरण और उत्तर कोलंबियन जगत सहित सभी पहलुओं का अध्ययन प्रस्तुत करती है.

जी.वी. स्कैमेल, *द फर्स्ट इंपीरियल एज : यूरोपियन ओवरसीज एक्सपैंसन 1400–1750*, 1989. यह साम्राज्यों की उत्पत्ति और महाद्वीप के दोनों ओर इसके प्रभाव का अच्छा विस्तृत विवेचन है. लेखक ने यूरोपीय व्यापारिक गतिविधियों को व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है.

स्टुआर्ट बी स्वार्ज (संपादन), *इंप्लिसिट अंडरस्टैंडिंग ऑब्जर्विंग, रिपोर्टिंग एंड रिफ्लेक्टिंग ऑन दि इनकाउंटर्स बिटविन यूरोपियन एंड अदर पीपुल्स इन दि अर्ली मॉडर्न एरा*, कैंब्रिज, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994. इसमें नए खोजे गए भूभागों के बारे में यूरोपीय दृष्टि पर विभिन्न विद्वानों के 19 आलेख शामिल हैं. पुस्तक में सांस्कृतिक संपर्कों की चर्चा की गई है. इसमें अंतर्निष्ठ नृजाति वर्णन शामिल है.

संजय सुब्रमण्यम (संपादन), *सिनर्स एंड सेंट्स, दि सक्सेसर्स ऑफ वास्को दा गामा*, दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1998. भारत में पुर्तगाली शासन के विकास की आलोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत की गई है.

————, *दि पोर्तुगीज एंपायर इन एशिया, 1500–1700*, लंदन, 1990. इस विषय पर नए नजरिए को पेश करने वाली विद्वत्तापूर्ण पुस्तक.

पावलो एमिलिया तावियानी, *क्रिस्टोफर कोलंबस : दि ग्रैंड डिजाइन*, दो खंडों में, लंदन, ऑबिस, 1985. प्रथम खंड में कोलंबस की जीवनी और उनके विचारों और उद्देश्यों पर परिचर्चा है और दूसरे खंड में अनेक नोट्स और दस्तावेज हैं.